समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• फरवरी २०१२ • वर्ष ६३ • अंक २
मूल्य : ₹.१० प्रति, वार्षिक ₹.१००

- बुरा न मानो होली है - उपाधियों का मुक्तहस्त वितरण
- समाज का बदलता स्वरूप - सार्थक गोष्ठी
- हरिद्वार में अखिल भारतीय समिति की बैठक

होली की शुभकामनायें

Caring for Land and People...

RUNGTA MINES LIMITED

Mine Owners, Ferro Alloy Producer & Mineral Processors

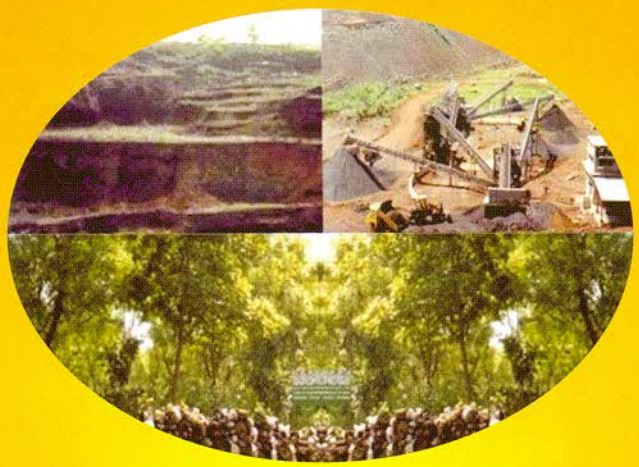

- ***IRON ORE*** *- BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *- BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***
- ***SPONGE IRON*** *LUMPS & FINES*

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA

Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442

Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com, GRAM: "RUNGTA"

REGISTERED OFFICE

8A, EXPRESS TOWER, 42A, SHAKESPEARE SARANI

KOLKATA 700017, INDIA

Phone: 033-2281 6580/3751; Fax: 91-33-2281 5380; Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION

RUNGTA OFFICE

MAIN ROAD, BARBIL 758035, DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA

Phone: 06767- 275221/277481/ 441; Fax: 91-6767-276161

Email: rungta_bbl@yahoo.co.in, GRAM: "RUNGTA"

SPONGE IRON DIVISION

ORISSA

RUNGTA OFFICE

MAIN ROAD, BARBIL 758035

DIST- KEONJHAR, ORISSA, INDIA

Phone: 06767- 27689/277391/021

Fax: 91-6767-277011

JHARKHAND

RUNGTA OFFICE

SADAR BAZAR, CHAIBASA - 833201

DIST- SINGHBHUM(W), JHARKHAND, INDIA

Phone: 06582-256621/256321

Fax: 91-6582-257521

समाज विकास

◆ फरवरी २०१२ ◆ वर्ष ६३ ◆ अंक २ ◆ एक प्रति - १० रु. ◆ वार्षिक-१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४
सम्पादकीय : हम हिंदी भाषा भूल रहे हैं – ***सीताराम शर्मा***	५-६
सम्मेलन द्वारा विवाह समारोहों में सादगी बरतने की अपील	६
अध्यक्षीय : महिलाओं के बढ़ते कदम.... ***हरि प्रसाद कानोड़िया***	७-८
वैवाहिक आचार संहिता	८
प्रगति का पैमाना परिवर्तन – ***संतोष सराफ***	९
समाज का बदलता स्वरूप विषय पर संगोष्ठी	११-१२
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का झंडोत्तोलन कार्यक्रम	१३
दो छंद - ***शिव सारदा***	१३
पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की पिकनिक पार्टी	१५
कविता - गीत	१५
सम्मेलन सभापति हरिप्रसाद कानोड़िया मानद डॉक्टरेट की उपाधि से विभूषित	१७
उच्चाधिकारी समिति में सम्मेलन अध्यक्ष आमंत्रित	१७
होली उपाधियों का मुक्त हस्त वितरण	१८-२०
कविता – नई सदी की तुम हो नारी	२१
SMS की दुनिया	२१
होली गीत – ***ताऊ शेखावाटी***	२२
प्रान्तीय समाचार – उत्तराखण्ड/कानपुर	२२
प्रान्तीय समाचार – छत्तीसगढ़	२३
आपणी भाषा राजस्थानी – ***शम्भु चौधरी***	२४
योग व रोजगार – ***संजीव भनोत***	२५-२६
मातृभाषा राजस्थानी – अगम और विकास – ***श्यामसुंदर टावरी***	२६-२८
पुस्तक समीक्षा – ईश्वरीय शक्तियों और मानवीय प्रवृतियों का सहज बोध	२९
प्रान्तीय समाचार – कांटाभांजी शाखा	२९
मांसाहार से उत्तम है शाकाहार – ***सुप्रिया***	३१-३२
सामूहिक विवाह समाज सुधार की महत्वपूर्ण प्रक्रिया : शर्मा	३३
नारी के सर्वांगीण विकास में मातृत्व का योगदान/वर वधू परिचय	३४

स्वत्वावधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७

फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com

के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

सीडीसी प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित

प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

मातृभाषा को महत्व

'समाज विकास' का जनवरी का अंक मिला। उसमें आपका सम्पादकीय लेख – "प्रवासी मारवाड़ी समाज एवं मातृभाषा" पढ़कर बहुत अच्छा लगा। इस लेख में आपने मातृभाषा के महत्व को दर्शाया है। मैं आपके विचारों से बहुत सहमत हूँ कि मातृभाषा किसी भी व्यक्ति की भावनाओं से जुड़ी होती है और भावो से ही संस्कार बनते हैं। लोक भाषा हमें हमारी संस्कृति से जोड़ती है। अतः हमें अपने नैतिक जीवन-व्यवहार में, अपने घर-परिवार में मातृभाषा को पूर्णतया अपनाना चाहिए जिससे हमारी युवा पीढ़ी भी मातृभाषा के महत्व को समझ सकें।

इसी अंक में श्री नथमल जी केडिया ने 'इक भोत ऊँची क्लास रो लाल बुझक्कड़' राजस्थानी व्यंग्य लिखकर समाज की धार्मिक भावनाओं को आघात पहुँचाया है। महाकवि तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' हिन्दुओं का महान धर्मग्रन्थ है। उस पर किसी प्रकार का हास्यास्पद व्यंग्य करना कतई उचित नहीं हैं। हमारा मारवाड़ी समाज धर्म के प्रति बहुत आस्था रखने वाला समाज है। अतः मैं श्री नथमल जी केडिया से निवेदन करना चाहूँगी कि इस प्रकार किसी धार्मिक कृति पर व्यंग्य ना करे। इससे हमारा समाज लज्जित होता है।

धन्यवाद!

– खुशबू बंसल
९/२४, जहाज बाड़ी, बेलूरमठ, हावड़ा

समाज विकास का कलेवर आकर्षक

इधर 'समाज विकास' उत्तरोत्तर उत्कृष्ट व उपयोगी हो रहा है – सम्मेलन संबंधी विविध सामग्री, सूचनाएँ, चित्र, सामाजिक-सांस्कृतिक-स्वास्थ्य उन्नयन के लेख व कविताएँ आदि। कागज, मुद्रण, कलेवर भी काफी मोहक व आकर्षक – संग्रहणीय है। स्थापना दिवस विशेषांक सचमुच तुष्टि प्रदान करता है। इस लगाव व लगन के लिए बधाई!

– श्यामसन्दर केड़िया
६/२, शरत बोस रोड, कोलकाता - २०

सारी सामग्री सराहनीय

समाज विकास का अंक मिला। सारी सामग्री सराहनीय। पूर्व अध्यक्षों के चित्र देकर पुरानी यादे आपने ताजा की तदार्थ धन्यवाद।

– लक्ष्मणदान कविया
मूण्डवा, नागौर (राजस्थान)

लूंठो मिनख

(पं. केसरीकांत जी शर्मा नै धमैमान सूं नीजर)

अेक लूंठो मिनख है, नगर मंडाव मांय।
नाम केसरी ओपतो, चरित उजलै मांय।।

कवि लिखारा दोबू परव, सबलो का'णीकार।
हाईकू रो रचयिता, घणो राखै भण्डार।।

साहित सारू तप कर्‌यो, दियो होम निज गात।
गहन तपसवी केसरी, करदे सबनै मात।।

साहित रचो निस्वार्थ थे, नी चावो सनमान।
करड़ो पड़त केसरी, राखै प्रभु रो ध्यान।।

गुण धणा कागद छोटो, किया होवै बखाण।
साहितकारां रै माय, पैठ गुणां रै पाण।।

कठै हाथ पसारै नी, नहीं किसी री आस।
अपनै आप में मस्त है, अेक प्रभु रो दास।।

राजस्थानी व्याकरण, मांडी पैली पोत।
इसी विदवता नै नमन, शंकर करसी भोत।।

कलम आपरी सोवणी, सैली है दमदार।
सटीक लेखण आपरो, हे खांडल सरदार।।

भलो भाग म्हारो घणो, हुयो आयसूं हेत।
आप सागर अथाह हो, म्है हूँ सूको खेत।।

अपणोपण लख आपरो, म्है हुयो गदगद।
लख लख नींकण आपनै, दरसण देयसो कद।।

– शंकर सकनाड़िया
चुरू (राजस्थान)

सम्पादकीय

हम हिन्दी भाषा भूल रहे हैं

– सीताराम शर्मा

"पापा अड़तालीस क्या होता है, धोबी को रूपया देना है", बेटा "फोर्टीएट" पिता खुश है कि बेटा केवल अंग्रेजी जानता है। यह घर-घर की कहानी है। आज हिन्दी को अंगरेजी की गुलामी से संघर्ष करना पड़ रहा है। उस गुलामी के कारण ही समाज में उसका आदर कम है। हम हिन्दी भाषा-भाषी भी अपने बच्चों को पहले घर में ए.बी.सी.डी. सिखाते है, क,ख,ग तो वह स्कूल में अपनी हिन्दी कक्षा में सीखता है। हिन्दी चूंकि दलितों-दमित्रों, श्रमिकों की भाषा है, इसलिये सफेदपोश अंगरेजी वाले लोग इससे डरते हैं। वे हिन्दी में वोट मांगते है, मगर राज-काज अंगरेजी में चलाते हैं। यह छलावा हिन्दी भाषी धीरे-धीरे समझ रहे है।

भारत में हिन्दी सरकार के बल पर नहीं, जनता के बल पर जीवित है। सरकारी स्तर पर कोई काम मौलिक ढंग से हिन्दी में नहीं हो रहा है। करोडों रूपये बर्बाद करके सरकार हिन्दी के मौलिक कार्यो में अडंगा लगाती है। सरकार के राजभाषा विभाग इस क्षेत्र में अक्षम सिद्ध हो रहे हैं। हिन्दी की तमाम सलाहकार समितियां हाथी दांत बनकर रह गई है। हिन्दी को आगे बढ़ाने के नाम पर होने वाला सरकारी तमाशा अद्‌भूत है। सरकार का काम क्या, पत्र व्यवहार तक हिन्दी मे नहीं होता। सरकारी अफसर हिन्दी के समारोहो मे पाँच मिनट का लिखा भाषण पढ़कर गायब हो जाते है। उनमें हिन्दी के प्रति हिकारत का भाव है। हिन्दी को क्या?

सरकार की मंशा भारतीय भाषाओं को धत्ता बताने की है। सरकार हिन्दी को भारत में चलाना ही नही चाहती। केन्द्र एवं राज्य सरकारों में यह आम सहमति बनती जा रही है कि भारतीय भाषाओं में अध्ययन करने के कारण बच्चे पिछड़ते जा रहे है। जबकि पिछड़ेपन के मूल कारण कहीं ओर है। हाल ही मे सैम पित्रादा की अध्यक्षता में गठित राष्ट्रीय ज्ञान आयोग ने सुझाव दिया है कि पहली कक्षा से सभी बच्चों को अंगरेजी की शिक्षा दी जाये।

हमारा अंगरेजी से विरोध नही हैं। हम एक कामकाजी भाषण के रूप में अंगरेज की जरूरत को महसूस करते है। विरोध है उस व्यवस्था का जहाँ सारे नियम कानून ऐसे बने है कि अंग्रेजी के बैगर न तो आपको रोजी रोटी मिलेगी और न ही सम्मान के साथ जीवन। मातृभाषा में शिक्षा के सम्बन्ध में महात्मा गांधी ने कहा था 'यदि मैं डिक्टेटर होता तो आज से ही मातृभाषाओं में शिक्षा अनिवार्य कर देता। मनो वैज्ञानिक भी यही कहते है कि अपनी मातृभाषा में बच्चा खेल-खेल में सीखता है और बड़ी तेजी से सीखता है। उसकी कल्पनाशीलता को बुनकर विकास मातृभाषाओं में ही हो सकता है।

हिन्दी : विश्वभाषा

औपनिवेशिक गुलामी की मानसिकता अंगरेजी के वर्चस्व को ढोती रही है। लेकिन आज हिन्दी का संसार, बाजारवाद, व्यापार, तकनीकी क्रांति, विज्ञापनवाद के कारण मीडिया क्रांति के साथ बढ़ रहा है। हिन्दी विश्व भाषा बनने की तैयारी है।

शुरु में ही संयुक्त राष्ट्र में पांच भाषाओ को मान्यता मिली जो अंग्रेजी, ब्रिटेन, रूस, फ्रंस और चीन की थी। स्पेनिश भाषा बोलने वाले अंग्रेजी के साथ थे इसलिये स्पेनिश को भी मान्यता मिल गयी। एक पैसे का डार्विनवाद संसार मे पनपा तो अरबी देशो की भाषाओं को भी मान्यता दी गयी। बीस-बाईस अरब देश है और उनका तैल धनबल वाला रूतबा है।

हिन्दी में विश्वभाषा, संयुक्त राष्ट्र की मान्यता प्राप्त भाषा बनने की क्षमता है। हम तो अभी मैथिली, भोजपुरी, बुंदेली, राजस्थानी, ब्रज आदि बोलियों की राजनीति में पड़कर भस्मासुर बनने की तैयारी कर रहे है। बोलियों की राजनीति बन्द करनी होगी।

समाज हस्तियों का कहना है कि हिन्दी बोलने वालों की संख्या आज विश्व में सर्वाधिक – एक अरब से भी ज्यादा है। अंगरेजी साढ़े चार देशों की भाषा है और मातृभाषा के तौर पर इसे बोलने वालों की संख्या पैतीस करोड़ से ज्यादा नहीं है।

आज भूमंडलीकरण, बाजारवार, व्यापारवाद का दौर है। हिन्दी के पास एक बहुत बड़ा बाजार है। जैसे जैसे भूमंडलीकरण बढ़ेगा हिन्दी अपने आप बढ़ेगी। विदेशी कम्पनियां अपना माल बेचने भारत में उमड़कर आ रही है। व्यापारी उसी भाषा में ग्राहक से बात करेगा, जिस भाषा मे उसका माल बिकेगा।

अब लोगों को समझ आ रहा है कि रूपर्ट मेर्डोक अपना चैनल हिन्दी में भी चलाना चाहते है। क्यों बिल गेट्स भारतीय भाषाओं में साफ्टवेयर बनाने को लालाचित है। विदेशी लोग हिन्दी सीख रहे है ताकि वे हिन्दी में व्यापार कर सके। अमेरिकी सरकार हिन्दी सीखने-सिखाने पर करोड़ों डॉलर खर्च कर रही है, ताकि वह भारत से अरबों कमा सके। विदेशी भाषाओं का सर्वाधिक अनुवाद हिन्दी में होता है और खूब बिकता है, चाहे "हैरी पॉटर" हो या "सूटेबल ब्याय"। हिन्दी फिल्में विश्व भर में धूम मचा रही है। दुनिया के स्तर सत्तर से ज्यादा विश्व विद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। हम हन्दी भूल रहे है, विश्व हिन्दी को अपना रहा है।

सम्मेलन द्वारा विवाह समारोहों में सादगी बरतने की अपील

आपके सुपुत्र/सुपुत्री के मांगलिक विवाह के अवसर पर कृपया हमारी हार्दिक बधाई स्वीकार करें। कृपया वर-वधू को सुखी एवं दीर्घ वैवाहिक जीवन की हमारी शुभकामनाएं प्रेषित करने की कृपा करें।

हमारे पूर्वजों ने ९६ वर्ष पूर्व समाज के सर्वांगीण विकास एवं समाज सुधार के उद्देश्यों को लेकर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना की। सम्मेलन दहेज, दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्ची, पर्दा प्रथा आदि रुढ़ियों एवं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध सचेष्ट रहा है।

वैवाहिक समारोहों में बढ़ता आडम्बर, दिखावा एवं फिजूलखर्ची, महंगे वैवाहिक निमंत्रण पत्र एवं शुभ विवाह जैसे मांगलिक अवसर पर कॉकटेल पार्टी (मद्यपान) का आयोजन आदि समाज के लिये गंभीर चिंता का विषय है। इन बढ़ती कुरीतियों पर अंकुश लगाना आवश्यक है। इतर समाज में हमारी छवि खराब हो रही है।

यह आवश्यक है कि हम इन विषयों पर गंभीर चिंतन कर इन प्रवृतियों से परहेज बरतते हुए समाज की स्वस्थ छवि प्रस्तुत करने में सहयोग प्रदान करें।

आपका सहयोग एवं समर्थन समाज सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान सिद्ध होगा।

आदर सहित –

आपका

हरि प्रसाद कानोड़िया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

जुगल किशोर सराफ
चेयरमैन
समाज सुधार समिति

संतोष सराफ
राष्ट्रीय महासचिव

अध्यक्षीय

महिलाओं के बढ़ते कदम – जागृति, क्रांति, सादगी, सेवा

– **हरि प्रसाद कानोड़िया**, राष्ट्रीय अध्यक्ष

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के दो अंग है। अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन और अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच। दोनों के साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की कुछ दूरी हो गयी थी। सभी महसूस कर रहे थे कि समाज सुधार के क्षेत्र में हम कदम से कदम मिला करके आगे बढ़ें, अपने समाज को मजबूत करें। इस दिशा में पटना में गत वर्ष जनवरी में आयोजित सम्मेलन के अधिवेशन में ही हमने महिला सम्मेलन और युवा मंच से आपसी सामंजस्य बढ़ाने पर जोर दिया था। इसी सामंजस्य को दृष्टिगत रखते हुए युवा मंच के आमंत्रण पर गत वर्ष नवम्बर महाराष्ट्र के नासिक में आयोजित अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के सम्मेलन में मैं शामिल हुआ। इस वर्ष जनवरी में महाराष्ट्र के ही जालना में अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन के पन्द्रहवें अधिवेशन में महिला सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती स्मिता चेचानी के विशेष आग्रह पर मैं और संयुक्त मंत्री श्री संजय जी हरलालका ने शामिल होकर समन्वय की दिशा में कदम बढ़ाया।

जालना में जो देखा और महसूस किया उसे देखकर यह कह सकता हूं कि महिला सम्मेलन का प्रत्येक कार्यक्रम प्रशंसनीय, सराहनीय और आश्चर्यजनक है। उनके संगठन में कार्यक्रम की शैली, उनका जोश उमंग, एक नई चेतना का प्रदर्शन कर रहा था और सादगी से किया गया आयोजन अधिवेशन की शोभा बढ़ा रहा था। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का भी मुख्य उद्देश्य सादगी को अपनाना और फिजूलखर्ची बंद कर आदर्श स्थापित करना है। युवा सम्मेलन और सभी धार्मिक संगठनों को महिला सम्मेलन से यह प्रेरणा लेनी चाहिए कि सादगी से आयोजन कैसे किया जाये। धन का उपयोग सेवा में हो, सजावट या आडम्बर में नहीं। विभिन्न राज्यों से काफी कष्ट उठा कर काफी संख्या में महिलायें इस अधिवेशन में शामिल हुई। यहां हमने नारी शक्ति देखी और पहचानी। सभी लोग नारी शक्ति देखते हैं, पर अनुभव नहीं करते हैं। सभी उसे अबला समझते हैं। उसे अवसर देने से वंचित रखते हैं। हमने देखा कि हमारे समाज की महिलायें हमसे आगे हैं।

कोलकाता से मुम्बई एवं वहां से औरंगाबाद होते हुए हमें जालना पहुंचना था। मैं किसी तरह अधिवेशन के प्रथम दिन के सम्मेलन में समय से शामिल हो पाया। हमारे संयुक्त मंत्री संजय हरलालका दूसरे दिन शामिल हुए। विभिन्न प्रांतों से आई सभी महिला अध्यक्षाओं ने सभा को सम्बोधित किया। अधिवेश में विशेष तौर पर नारी शक्ति का आवाहन-संगठन को मजबूत करना, शाखा सदस्यता को बढ़ाना, पूरे विश्व में संगठन की स्थापना करना, राजनीति में शामिल होना, भ्रूण हत्या को बंद करना, महिला लघु उद्योग को बढ़ावा देना, टूटते संबंधों को जोड़ना, संस्कार और संस्कृति को व्यक्तिगत एवं सामाजिक स्तर पर लाना, आडम्बर, फिजूलखर्ची, सादगी, समाज सेवा और देश सेवा और कई अन्य पक्षों पर विचार किया गया। लघु उद्योग प्रदर्शन और भ्रूण हत्या की विशेष क्रांतिकारी प्रदर्शनी वहां लगाई गई थी। अध्यक्षा श्रीमती स्मिताजी ने अपने भाषण में सम्मेलन को पूर्ण सहयोग देने के साथ-साथ कदम मिलाकर चलने का आश्वासन दिया। मैंने भी अपने वक्तव्य में फिजूलखर्ची और आडम्बर के विषय में काफी चिंता व्यक्त की। मेरा मानना है कि महिलाएं ही सुधारवादी कदम उठाकर सुधार ला सकती हैं। वह सादगी की क्रांति ला सकती हैं। अगर महिलाएं सादगी के लिये कमर कस ले तो उनके समक्ष सभी को नतमस्तक होना पड़ेगा। वे शादी-विवाह और अन्य धार्मिक संस्थानों में फिजूलखर्ची पर अंकुश लगा सकती हैं। क्योंकि महिलाएं प्रेरणा स्रोत होती हैं। रत्नावली ने तुलसी को तुलसीदास बनाया। राणी हाडी (राजस्थान) ने अपना सिर काट कर अपने पति को लड़ाई के मैदान में दुश्मनों से लड़ने

के लिए प्रोत्साहित किया। धाय पन्ना ने अपने युवा पुत्र का बलिदान दिया। क्या हमारी समाज की महिलाएं समाज में सादगी की क्रांति नहीं ला सकती हैं? ये जरूर लाएंगी। इस कार्य में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन हर संभव सहयोग देगा।

अधिवेशन के दूसरे दिन राष्ट्रीय प्रगति से सम्बन्धित विषयों को लेकर पूरे शहर में करीबन ९० मिनट की रैली निकाली गई। नेत्र दान, शरीर दान, पशु पक्षी की रक्षा, भ्रूण हत्या, सादगी के नारों से वातावरण गूंज रहा था। मैं सभी प्रांतों की महिलाओं के साथ इस शोभनीय व सराहनीय जुलूस में शामिल रहा। हमने सभी प्रांत की महिलाओं से अपने-अपने प्रांतों में इस तरह का जुलूस निकालने के लिए कहा। सभी महिलाएं सादगी की एक ड्रेस कोड में थी। जुलूस की समाप्ति के बाद राष्ट्रीय पुरस्कार वितरण हुआ। उसके बाद नई राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती लताजी अग्रवाल ने पद ग्रहण किया। मैंने देखा कि महिला सम्मेलन की सभी कमेटियां सराहनीय कार्य कर रही है। उनके कार्यों को देखते हुए प्रोत्साहन स्वरूप अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से २१,००० रुपया का पुरस्कार महिला सम्मेलन की अध्यक्षा को दिया गया।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महाराष्ट्र के प्रांतीय अध्यक्ष डॉ. जयप्रकाश मूंधड़ा और श्री वीरेंद्र धोका भी वहां पधारे, महिलाओं को सम्बोधित किया। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सभी प्रांतों के अध्यक्ष, शाखाओं के अध्यक्ष महिला सम्मेलन और युवा सम्मेलन के साथ कदम मिला कर सम्मेलन को, समाज को, देश को मजबूत बनाएंगे। हमें निस्वार्थ काम करते रहना है। अहम् नहीं रखना है। हमें नम्र भाव के साथ संगठन को तन, मन, धन से मजबूत करना है। इसी में आनंद है। कोई किसी को बड़ा-छोटा नहीं समझे। हम सभी साथी हैं। हमारी मंजिल एक है। हमें यह हमेशा याद रखना चाहिए कि भगवान शिव ने माता उमा को अर्द्धशरीर दिया है–अर्द्धेश्वर, नरेश्वर कहलाते हैं। भगवान विष्णु ने माता उमा लक्ष्मी को हृदय में जगह दी है। पत्नी अर्द्धांगिनी कहलाती है, फिर भी यह विडम्बना है कि कन्या भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक कुरीति अभी तक हमारे पीछे है। बाल विवाह, आडम्बर, दहेज प्रथा ही इसका मूल कारण है। हम प्रण करें कि हमें इन भावना को जड़ से उखाड़ना है। सादगी की क्रांति लायें। आडम्बर व फिजूलखर्ची बंद करें।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

वैवाहिक आचार संहिता

- मिलनी सबकी ४ रुपया।
- अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।
- विवाह मे दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।
- कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपाएं।
- नेग का कार्यक्रम एक ही हो।
- सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष भी वहन करें।
- बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराब आदि का उपयोग वर्जित हो।
- रात्रि के विवाह की वनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।

सम्मेलन धार्मिक व अन्य सामाजिक समारोहों में भी सादगी बरतने की अपील करता है।

प्रगति का पैमाना परिवर्तन

– **सन्तोष सराफ**, राष्ट्रीय महामंत्री

पश्चिमी देश का समाज हो या पूरब का समाज परिवर्तन आना अवश्यंभावी है। समाज में यदि परिवर्तन न आए तो ठहरा हुआ समाज माना जाएगा। समाज को बदलने से रोका जाए तो समाज विकास के पथ पर अग्रसर नहीं हो पाएगा। इस तरह कहा जा सकता है कि प्रगति का पैमाना ही परिवर्तन है।

जैसे एक मकान की संरचना ईट, बालू, पत्थर, सीमेंट से तैयार होती है उसी तरह समाज की संरचना परंपरा, संस्कृति, नियम, प्रथा, लोकाचार, खानपान, रूढ़ि, रीति-रिवाज आदि है। किसी भी समाज की संरचना के ये अंग है। इन्हीं से समाज का निर्माण होता है। एक तरह से यह कहा जा सकता है कि समाज को पोषण इन्हीं अंगों से प्राप्त होता है। समाज से इसे इटा दिया जाए तो वह समाज पंगु हो जाएगा।

हमारा मारवाड़ी समाज भी उसी तरह की संरचनाओं से मिलकर बना है। सामाजिक संरचना के जो भी अंग है जैसे नियम, कानून, प्रथा, परंपरा आदि परिवर्तन सभी में हो रहे हैं। समाज में जो परंपराएं विद्यमान थी वह बदल रही है। पुरखों के बनाए नियम बदल रहे हैं। समाज की प्रचलित प्रथा बदल रही है। पुरानी मिथक की जगह नयी मिथक आ रही है। इस प्रकार समाज की पूरी संरचना में ही आमूलचूल परिवर्तन आ रहा है।

समाज में आ रहे बदलाव पर यदि विराम लगाया जाए तो समाज के विकास का मार्ग अवरूद्ध हो जाएगा। इतनी कोशिश हमलोग अवश्य करे कि समाज में जो परिवर्तन हो रहा है वह समाज हित में हो। ऐसे बदलाव को कभी न स्वीकारें जिससे हमें अवनति हो।

हमारे पूर्वजों ने समाज का ताना-बुनते हुए संस्कृति, नियम, परंपराएं स्थापित की थी उसका संरक्षण हमलोगों को अवश्य करना चाहिए क्योंकि समाज से यदि उसे हटा देंगे तो समाज की पहचान मिट जाएगी। संस्कृति व परंपरा समाज की पहचान है।

विवाह समारोह के अवसर पर आड़म्बर, दिखावा, फिजूलखर्ची, महंगे कार्ड का वितरण, नाच तमाशा इस तरह की बुराईयों ने हमारे समाज को ग्रस लिया है। इन बुराईयों को भी हमलोग परिवर्तन मान बैठे हैं। समाज में पनपी इन

बुराईयों को परिवर्तन नहीं माना जा सकता क्योंकि इन कुरीतियों से समाज को नुकसान पहुंच रहा है। समाज में परिवर्तन तो अवश्यंभावी है किंतु ऐसे परिवर्तनों को रोकने में ही समाज का कल्याण है। विज्ञान की नित नयी खोज ने मानवीय सोच को प्रभावित, परिष्कृत किया है। ज्यों-ज्यों मानवीय ज्ञान की परिधि बढ़ रही है, त्यों-त्यों हमलोगों को और भी सभ्य होना चाहिए।

हमारी युवा शक्ति तथा महिला शक्ति समाज की रीढ़ हैं। समाज का नेतृत्व इन्हीं दोनों शक्तियों को करना है। दोनों शक्ति मिलकर सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ यदि जेहाद छेड़ दे तो कुरीतियों का सफाया होते देर नहीं लगेगी, किंतु दुःख है कि हमारे युवा इस मामले में दिग्भ्रमित हैं।

विवाह समारोह जैसे मांगलिक कार्य के अवसर पर मद्यपान करने के प्रचलन को शर्मनाक ही कहा जा सकता है। इसे बदलाव कदापि नहीं कहा जा सकता क्योंकि मद्यपान हमारे समाज की परंपरा का अंग नहीं है। मद्यपान करने से व्यक्ति का नैतिक ह्रास होता है, साथ ही धन और स्वास्थ्य की भी हानि होती है। विवाह समारोह में मद्यपान का प्रचलन वर्जित होना चाहिए। हमारे पुरखे बिना किसी आड़म्बर के शादी समारोह का आयोजन करते थे, अतः हमें अपने पुरखों का अनुकरण करना चाहिए।

उच्च एवं मध्य वर्ग में इन दिनों ताम झाम से शादी समारोह आयोजित करवाने का रिवाज बढ़ा है। उच्च वर्ग ताम झाम से शादी करवाना अपनी शान समझते हैं। देखा-देखी मध्यम वर्ग भी उनकी नकल करता है। समाज के उच्च वर्ग यदि चाहें तो ताम झाम से शादी नहीं कर मध्यम वर्ग को कुछ सीख दे सकते हैं।

असम्भव कुछ भी नहीं यदि हमलोग दृढ़ निश्चय कर लें तो बदलाव के बयार के बीच भी अपनी परंपरा व संस्कृति को जीवित रख सकते हैं। मारवाड़ी समाज अपनी शालीनता के लिए जग प्रसिद्ध है। हमारा समाज जिस उदारता, दानशीलता, शांतिप्रियता, सेवाभाव, कर्त्तव्यपरायणता के लिए जाना जाता है, उसे कायम रखा जा सकता है।

With Best Compliments From :-

M/s ROAD CARGO MOVERS (P) LTD.

1, GIBSON LANE, 2ND FLOOR, SUIT NO :- 211
KOLKATA -700 069

Tele No. : 2210-3480, 2210-3485
Fax No. : 2231-9221
e-mail : roadcargo@vsnl.net

BRANCHES & ASSOCIATES AT

DURGAPUR, HALDIA, CHENNAI, HYDERABAD, BANGALORE, ICHAPURAM, BHIVANDI, COCHI, MUMBAI, VIJAYWADA, COIMBATORE, GAZIABAD, PONDICHERRY, VISAKHAPATNAM

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

'समाज का बदलता स्वरूप' विषय पर संगोष्ठी

धन का दिखावा न करें मारवाड़ी समाज

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा 'समाज का बदलता स्वरूप' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर अध्यक्ष सम्मेलन सभापति हरिप्रसाद कानोड़िया ने कहा कि समाज के साथ-साथ व्यक्ति के जीवन में बदलाव आना स्वाभाविक प्रक्रिया है। प्रकृति में भी बदलाव आता है लेकिन बदलाव कैसा हो, क्यों हो और किस तरह हो, यह महत्वपूर्ण है। जरूरत है इस मामले में मार्गदर्शन की। धर्म हमें इसका मार्ग दिखाता है। लेकिन विडम्बना यह है कि हम पश्चिमी सभ्यता में स्वयं को ढाल रहे हैं। आज जरूरत इस बात की भी है कि हमारे समाज में बढ़ रही नशे की प्रवृत्ति को किस तरह रोका जाये। युवा वर्ग इसकी ओर अधिक आकर्षित हो रहा है। कहीं-कहीं तो महलाओं को भी इसकी चपेट में देखा गया है। विषय प्रवर्तन करते हुए सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने कहा कि धन कमाना हमारे समाज की खासियत रही है और यह किसी भी मायने में बुरा नहीं है किन्तु बढ़ते धन के साथ इसका दिखावा करना सर्वथा

अनुचित है। हमारी सम्पन्नता बढ़ रही है किन्तु हमारे सामाजिक व नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है। धर्म के नाम पर व्यवसाय हो रहा है। लाखों रूपये धार्मिक आयोजनों में सिर्फ दिखावे में खर्च हो रहे हैं, यह धार्मिकता नहीं, व्यवसाय है। इस पर अंकुश जरूरी है।

अधिवक्ता जुगल किशोर जैथलिया ने कहा कि हमारे समाज का मूल आधार रहा है संयुक्त परिवार। किन्तु आज परिवार टूट रहे हैं। यह समाज का बदलता स्वरूप है जो कि स्वीकार्य नहीं होना चाहिए। श्रीमती ममता बिन्नानी ने कहा कि हमें पहले स्वयं में बदलाव करना होगा। जब तक हम खुद को न सुधारेंगे, समाज नहीं सुधरेगा। हमें अपनी संस्कृति को जिन्दा रखने के लिए बोलचाल में मातृ भाषा का प्रयोग करना चाहिए। विश्वनाथ अग्रवाल ने कहा कि प. बंगाल में मारवाड़ी समाज बहुत कमजोर है। इसका कारण है कि हमारा यहाँ कोई प्रतिनिधित्व नहीं है। इससे पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री संतोष सराफ ने स्वागत वक्तव्य दिया। धन्यवाद ज्ञापन संयोजक कैलाश परसरामपुरिया व प्रमोद गोयनका ने दिया। संचालन किया संयुक्त राष्ट्रीय मंत्री संजय हरलालका ने। संगोष्ठी में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रामअवतार पोद्दार, कोषाध्यक्ष आत्माराम सोंथलया, संयुक्त मंत्री कैलाशपति तोदी सहित कांकुड़गाछी, लेकटाउन, बांगुड़ अंचल के भी काफी सदस्य मौजूद थे।

आपके विचार

"समाज विकास" अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र है जो गत ६१ वर्षों से कोलकाता से प्रकाशित किया जा रहा हैं।

सम्मेलन के मुख्य उद्देश्य हैं समाज सुधार, समरसता एवं राष्ट्रीय एकता। समाज के साहित्यिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास हेतु विभिन्न पहलुओ पर "समाज विकास" के माध्यम से चर्चा आयोजित की जाती है।

समाज सुधार एवं समरसता के अन्तर्गत देहज-दिखावा, आडम्बर, फिजूलखर्ची, विधवा विवाह, बढ़ते तलाक, टूटते परिवार, गिरते सामाजिक एवं नैतिक मूल्य, अर्न्तजातीय विवाह, वृद्धाश्रम क्यों, आदि विषयों पर विचार-विवेचना "समाज सुधार" के माध्यम से करने का प्रयास किया जाता है।

आपके विचारों को प्रकाशित कर हमें हार्दिक प्रसन्नता होगी।

सीताराम शर्मा
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष
एवं सम्पादक, समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का झंडोत्तोलन कार्यक्रम

देश इस समय संधिकाल पर खड़ा है : जैथलिया

अधिवक्ता जुगलकिशोर जैथलिया ने स्थितियों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि देश इस समय संधि काल पर खड़ा है। सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री संतोष सराफ ने बढ़ते भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद पर चिंता जाहिर की। मौके पर संयुक्त महामंत्री कैलाशपति तोदी, श्यामलाल डोकानिया, नन्दलाल सिंघानिया, प्रमोद गोयनका, कैलाश कुमार अग्रवाल, राम निवास चोटिया आदि कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

६३वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से सम्मेलन के अमर्हस्ट स्ट्रीट स्थित भवन में झंडोत्तोलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। झंडोत्तोलन किया सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने। जण-गण मन राष्ट्रीय गान के उपरांत श्री शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आजादी के बाद देश ने कई क्षेत्रों में काफी प्रगति की है, किन्तु कुछ क्षेत्रों में अभी भी पर्याप्त विकास नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि हमें अभी समाज एवं देश हित में बहुत से कार्य करने हैं।

दो छन्द –

यह सहर अहसान फरामोश जिन्दगी
बन्दुक का घर और खामोश जिन्दगी।

न घर है न जमीं अपनी हमारी याद किसे आए
हमीं पैगाम लिख भेजे औ' खुद ब खुद मुस्कुराए।

– शिव सारदा

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

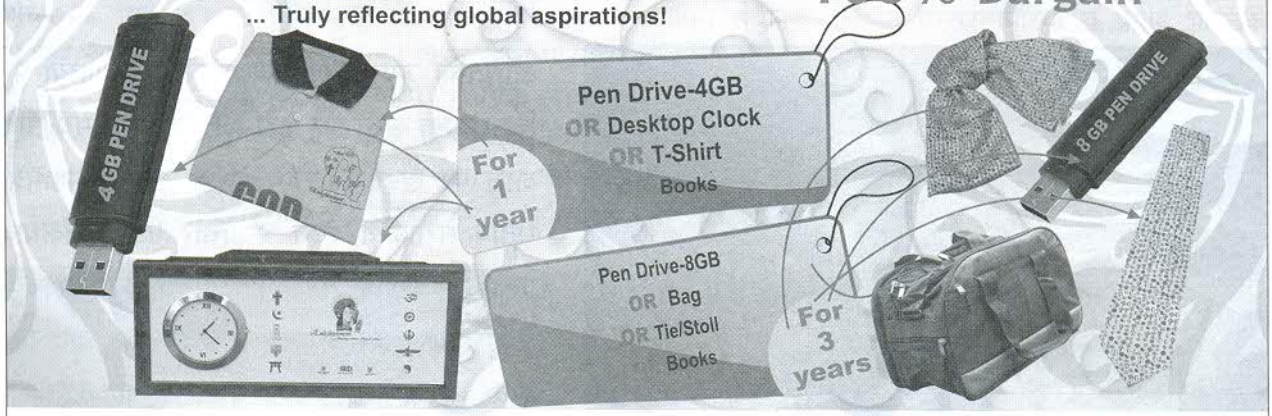

Subscribe Business Economics :

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1440/-	1440/-	1440/-	216	144	☐ 8GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Tie/Stoll OR ☐ Books
☐	1 Year	24	480/-	480/-	480/-	72	48	☐ 4GB Pen Drive OR ☐ Desktop Clock OR ☐ T-Shirt OR ☐ Books
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ Exclusively for Students/Institutions
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

For 1 year Book of choice upto ₹ 480 | **For 3 years Books of choice upto ₹ 1440**

Business Economics Subscription Form

Name : Mr./Ms. _____

Address : _____

_____ City/District : _____

State : _____ Country : _____ Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : _____ Mobile : _____ Landline : _____ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. _____ dated: _____ for Rs. _____ drawn on: _____

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: _____ date: _____

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai :** Rajendra Singh : 90290 84951
New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 05889

Lucky DRAW

QUARTERLY LUCKY DRAW FOR THE SUBSCRIBERS :
1st Prize : INR 2000/- ● 2nd Prize : INR 1000/- ● 3rd Prize : INR 500/-

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की पिकनिक पार्टी

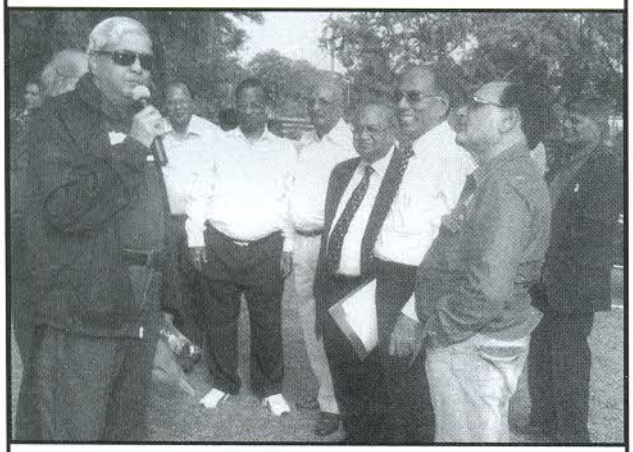

पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी एक पिकनिक पार्टी का आयोजन श्री कृष्णकुमार सिंघानिया के गंगा निकेतन उद्यान में किया गया। पिकनिक पार्टी में पुरुष, महिला व बच्चों सहित करीबन ३५० व्यक्तियों ने भाग लिया। इस अवसर पर आमोद-प्रमोद व संगीत का बच्चों एवं महिलाओं ने काफी आनन्द उठाया। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, उपाध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय सचिव श्री संतोष सराफ सम्मेलन के विशेष आमंत्रण पर पिकनिक में उपस्थित हुए।

इस अवसर पर श्री शर्मा ने कहा कि आज पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने हमलोगों को अपनी पिकनिक पार्टी में आमंत्रित कर आपलोगों के साथ आनन्द मनाने का मौका दिया। मौके पर श्री आत्माराम क्याल, श्री रामप्रसाद भालोटिया, श्री विजय गुजरवासिया, श्री गिरधारीलाल पारीक आदि कई सदस्य मौजूद थे। सूचना शाखा के प्रधान सचिव रामगोपाल बागला ने दी।

कविता

कथा-कहानी

थोड़ी खुशियाँ, लाखों गम है, अपनी कथा कहानी में
रोती मुनियाँ, आँखे नम है, अपनी कथा कहानी में।
मुट्ठी में कैद कर जुगनू को, सितारों की वो बात करे
कहती दुनियाँ, बड़ा दम है, अपनी कथा कहानी में।
सर झुकाना ही काफी नहीं, भाव चाहिए भक्ति के लिए
बहती नदियाँ, पानी कम है, अपनी कथा कहानी में।
पता पूछते हो क्यों किसी से, क्या बतायेगा वह तुम्हें
हाथ लाठियाँ, बंदूक-बम है, अपनी कथा कहानी में।
आना होगा तो स्वतः आएगी, बेचैनी क्यों खुशी के लिए
आई नदियाँ, नई सरगम है, अपनी कथा कहानी में।
प्रभु उसको नहीं याद मगर, बस याद रहे दुनियादारी
लौटी आँधियाँ, छाया मातम है, अपनी कथा कहानी में।
लड़खड़ाता है दो कदम चलकर, कैसे मंजिल पाए यादव
सूनी गलियाँ, दोषी हम है, अपनी कथा कहानी में।

– **रामचरण यादव "याददाश्त"**
प्रधान सम्पादक – नाजनीन

गीत

आज तो सजती सभाएँ

आज तो सजती सभाएँ, कल न जाने क्या सजेगा
आज तो शहनाइयाँ हैं, कल न जाने क्या बजेगा,
प्यार के तोरण लगे हैं, हर तरफ मनुहार हँसते
आज फूलों के सिंहासन, कल न जाने क्या मिलेगा?

पथ बिछी है हरित क्यारी, खिल रही चंपा चमेली
आज पुरवा पवन चंचल, कल न जाने क्या बहेगा,
गान अमृत झर रहा है, बावरी कोयल हुई है
आज तितली की उड़ानें, कल न जाने क्या उड़ेगा?

हर प्रहर मधुरात छाई, हो रहा अभिसार रजनी
आज पूनम नाचती है, कल न जाने क्या नचेगा,
अगरु चंदन लेप लगते, प्रणय के चितवन अनोखे
आज घी के दीप जलते, कल न जाने क्या जलेगा?

– **श्यामसुन्दर बगड़िया**
२०, गणेशचन्द्र एवेन्यू
कोलकाता-७०० ०२३

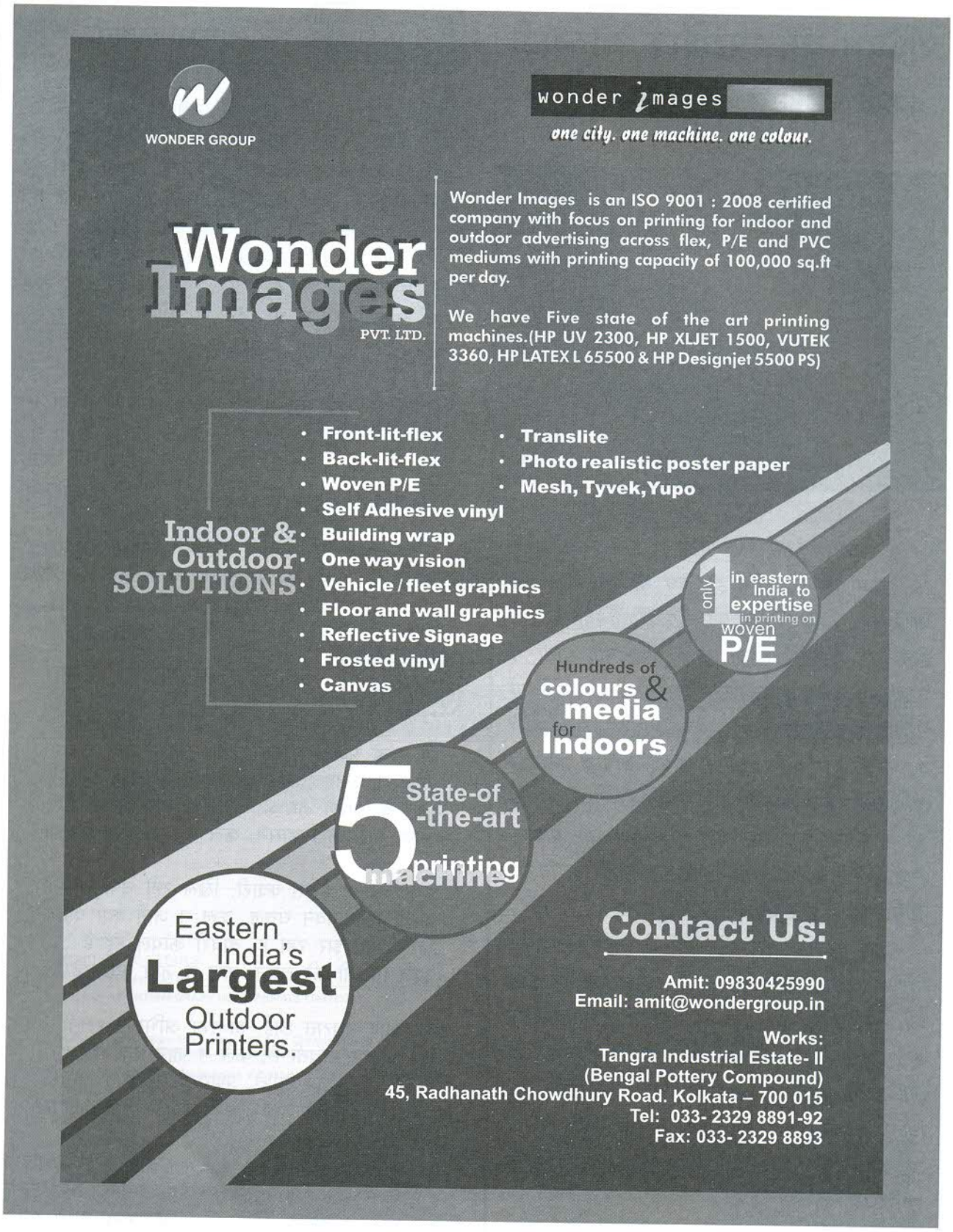
WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images
PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
Front-lit-flex
Back-lit-flex
Woven P/E
Self Adhesive vinyl
Building wrap
One way vision
Vehicle / fleet graphics
Floor and wall graphics
Reflective Signage
Frosted vinyl
Canvas
Translite
Photo realistic poster paper
Mesh, Tyvek,Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of-the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

सम्मेलन सभापति हरिप्रसाद कानोड़िया मानद डॉक्टरेट की उपाधि से विभूषित

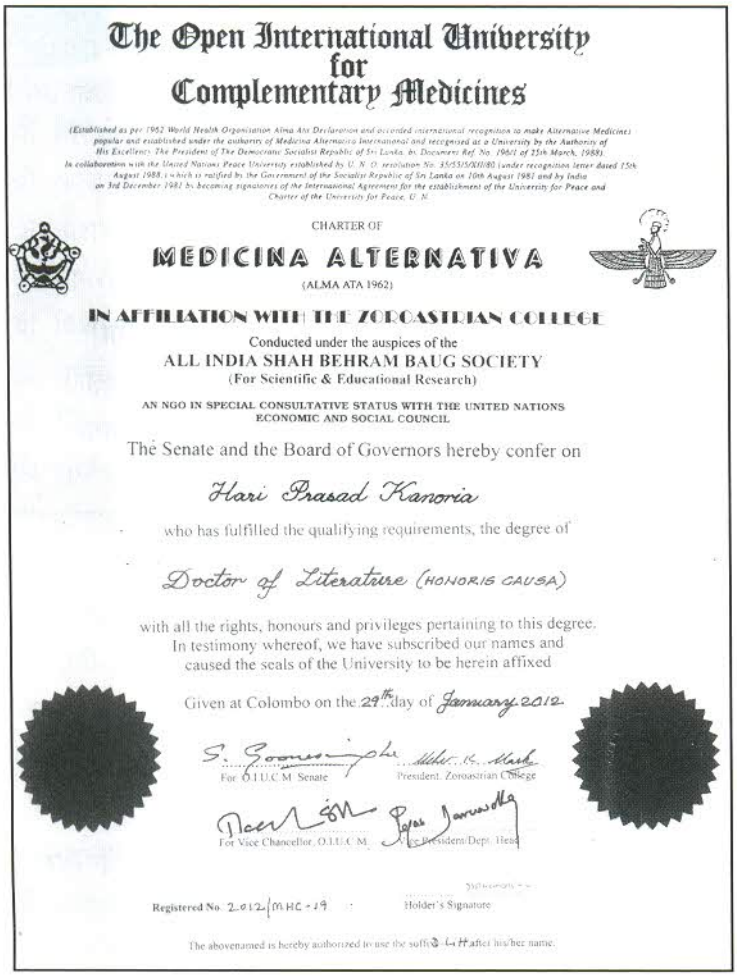

The Open International University
for
Complementary Medicines

(Established as per 1962 World Health Organisation Alma Ata Declaration and accorded international recognition to make Alternative Medicines popular and established under the authority of Medicina Alternativa International and recognised as a University by the Authority of His Excellency The President of The Democratic Socialist Republic of Sri Lanka, by Document Ref. No. 196/1 of 25th March, 1988).
In collaboration with the United Nations Peace University established by U. N. O. resolution No. 35/55/5/XII/80 (under recognition letter dated 15th August 1988.) which is ratified by the Government of the Socialist Republic of Sri Lanka on 10th August 1981 and by India on 3rd December 1981 by becoming signatories of the International Agreement for the establishment of the University for Peace and Charter of the University for Peace, U. N.

CHARTER OF

MEDICINA ALTERNATIVA

(ALMA ATA 1962)

IN AFFILIATION WITH THE ZOROASTRIAN COLLEGE

Conducted under the auspices of the
ALL INDIA SHAH BEHRAM BAUG SOCIETY
(For Scientific & Educational Research)

AN NGO IN SPECIAL CONSULTATIVE STATUS WITH THE UNITED NATIONS ECONOMIC AND SOCIAL COUNCIL

The Senate and the Board of Governors hereby confer on

Hari Prasad Kanoria

who has fulfilled the qualifying requirements, the degree of

Doctor of Literature (HONORIS CAUSA)

with all the rights, honours and privileges pertaining to this degree.
In testimony whereof, we have subscribed our names and caused the seals of the University to be herein affixed

Given at Colombo on the 29th day of January 2012

For O.I.U.C.M. Senate — President, Zoroastrian College

For Vice Chancellor, O.I.U.C.M. — Vice President/Dept. Head

Registered No. 2012/MHC-19 — Holder's Signature

The abovenamed is hereby authorized to use the suffix D.Litt after his/her name.

ओपेन इण्टर नेशनल युनिवार्सिटी फार कमप्लीमेंटरी मेडिसिन, श्रीलंका ने सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया को डाक्टर आफ लिटरेचर (होनोरिस कासा) उपाधि से विभूषित किया है।

विश्व स्वास्थ्य संस्था द्वारा स्थापित तथा राष्ट्रसंघ शान्ति विश्वविद्यालय के रूप में राष्ट्रसंघ से प्राप्त मान्यता अर्न्तराष्ट्रीय विश्वविद्यालय ने गत २९ जनवरी २०१२ को एक भव्य समारोह में उक्त डाक्टरेट प्रदान किया।

सम्मेलन की ओर से डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

उच्चाधिकारी समिति में सम्मेलन अध्यक्ष आमंत्रित

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ललित गांधी ने मंच के संविधान की धारा ३१(ए) के प्रावधानों के अनुसार सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़या को उच्चाधिकारी समिति के सदस्य के रूप में आमंत्रित किया है।

साथ ही मंच के संविधान की धारा ३१(अ) के तहत सम्मेलन अध्यक्ष श्री कानोड़िया एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री सन्तोष सराफ को मंच की सलाहकार समिति की सदस्यता के लिये आमंत्रित किया है। उक्त सार्थक पहल के लिये युवामंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललित गांधी बधाई के पात्र है।

ज्ञात रहे कि युवा शक्ति के विकास के लिये अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ने १९८५ में अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच की एक सहयोगी संस्था के रूप में स्थापना की थी। इसके पूर्व १९८३ में सर्वभारतीय स्तर पर महिलाओं को संगठित एवं जागृत करने के लिये अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की सम्मेलन ने स्थापना की।

सम्मेलन, युवा मंच एवं महिला सम्मेलन के सामूहिक प्रयासों से मारवाड़ी सम्मेलन के मुख्य उद्देश्यो समाज सुधार, समरसता एवं समाज के सर्वांगीन विकास के उद्देश्यो को प्राप्त किया जा सकता है।

बुरा न मानो होली है
उपाधियों का मुक्तहस्त वितरण

श्री हरिशंकर सिंहानिया - अभिभावक
श्री सीताराम शर्मा - समाज चेतना
श्री हरि प्रसाद कानोड़िया - आध्यात्म
श्री नन्दलाल रुँगटा - सफल नेतृत्व
श्री मोहनलाल तुलस्यान - पुरानी यादें
श्री रतन शाह - राजस्थानी भाषा
श्री भानीराम सुरेका - आत्मकथा
श्री सन्तोष सराफ - जीना इसी का नाम है
श्री ओम प्रकाश खण्डेलवाल - कर्मठ
श्री बद्री प्रसाद भीमसरिया - बिहारी बाबू
श्री संतोष अग्रवाल, रायपुर - प्रभारी
श्री राम कुमार गोयल - साथ-साथ
श्री राज के पुरोहित - कालबा देवी
श्री ओंकार मल अग्रवाल - नया भार, नयी अपेक्षाएं
श्री राम अवतार पोद्दार - भारप्राप्त
श्री आत्माराम सोंथलिया - भामाशाह
श्री संजय हरलालका - यत्र-तत्र-सर्वत्र
श्री कैलाशपति तोदी - हम साथ है
श्री सतीश देवड़ा - पाण्डेचेरी चलो
श्री ओम प्रकाश पोद्दार - सामूहिक विवाह
श्री संतोष जैन - जो जीता वहीं सिकन्दर
श्री शंभु चौधरी - रिसर्च
श्री धर्मचन्द अग्रवाल - भिवानी का मजा
श्री राजेन्द्र खण्डेलवाल - फ्रेंड्स ऑफ कोलकाता
श्री नवल जोशी - सेहत पहले
श्री प्रदीप ढेढीया - धार्मिक मनोरंजन
श्री सुभाष मुरारका - भाग-दौड़
श्री रामदयाल मस्करा - बेगुसराय से कोलकाता
श्री मौजीराम जैन - मन बहुत, शरीर साथ नहीं
श्री रामपाल अग्रवाल नूतन - अन्ना हजारे की जय

श्री हरिकृष्ण चौधरी - हरियाणा में शिक्षा प्रसार
श्री साधुराम बंसल - समाज सेवा
श्री इन्द्रचन्द्र संचेती - इतिहास
श्री हरिप्रसाद बुधिया - सर्वप्रिय
श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल - शिक्षा प्रेमी
श्री श्रवण तोदी - समय बदलेगा
श्री द्वारका प्रसाद डावड़ीवाल - भला करते चलो
श्री राजेन्द्र बच्छावत - जय लक्ष्मी माता
श्री श्रीकृष्ण खेतान - हिम्मत है
श्री नथमल केडिया - राजस्थानी साहित्य
श्री कुंज विहारी अग्रवाल - न तीन में न तेरह में
श्री श्याम सुन्दर बगड़िया - कवि मन
श्री रामनिवास चोटिया - जिंदादिल
श्री रामनारायण जैन - अवसर की तलाश में
श्री सावरमल भीमसरिया - कुछ समझ में नहीं आता
श्री बाबूलाल धनानिया - आवाज में दम
श्री बालकृष्ण महेश्वरी - कलकत्ता से बैंगलौर
श्री रमेश चन्द्र गोपीकिशन बंग - हम जीतेंगे
श्री ललित सकलचन्द गांधी - युवा अध्यक्ष
श्री विजय कुमार मंगलुनिया - अबकी मेरी बारी
श्री रवीन्द्र कुमार लड़िया - भाग-दौड़
श्री कैलाश मल दूगड़ - मन नही मानता
श्री विजय कुमार गोयल - कुछ करना है
श्री सुरेन्द्र कुमार डालमिया - क्या शिकवा करें
श्री सोम प्रकाश गोयनका - मस्ती ही मस्ती
श्री विजय गुजरवासिया - सब खरीद लो
श्री पन्ना लाल वैद (दिल्ली) - दिल्ली किसी की नहीं
श्री पवन कुमार गोयनका(दिल्ली) - भूलेबिसरे
श्री कमल नोपानी (बिहार) - मेरी जिम्मेवारी
श्री सुरेन्द्र लाठ (उड़ीसा) - कुछ करना है

श्री विजय केडिया (उड़ीसा)	- नेता का साथ	श्री एन. जी. खेतान	- माई लार्ड
श्री विनय सरावगी (झारखण्ड)	- असमंजस में	श्री रामनाथ झुनझुनवाला	- दोस्ती का मजा
डॉ. श्याम सुन्दर हरलालका	- बागडौर सौंप दी	श्री सुनील कुमार डागा	- जिन्दा दिल
श्री रामगोपाल बागला	- बात कम, काम ज्यादा	श्री श्यामलाल डोकानिया	- सामाजिक सम्मान
श्री नारायण प्रसाद माधोगढ़िया	- आशीर्वाद	श्री विश्वनाथ सिंघानिया	- बुलन्दी
डॉ. जयप्रकाश मूँधड़ा (महाराष्ट्र)	- पितामह	श्री दीनेश बजाज	- मैं चैयरमैन बन गया
श्री चिरंजीलाल अग्रवाल	- सबके साथ	श्री दिलीप कु. मनसुखलाल गांधी	- युवा मंच प्रेरक
श्री सज्जन भजनका	-चेम्बर किंग इन वेटिंग	श्री विनोद तोदी	- मोर्चा संभाल
श्री नारायण प्रसाद अग्रवाल	- कहाँ गये वो दिन	श्री वनवारी लाल सोती	- दान-धर्म
श्री मामराज अग्रवाल	- दिल्ली पर कब्जा	श्री मुकुन्द राठी	- गीत गाता चल
श्री विशम्भर दयाल सुरैका	- प्रेरक	श्री गोविन्द राम ढ़ाणेवाल	- डर तो लगता है
श्री वासुदेव प्रसाद बुधिया	- दोस्त का दोस्त	श्री विश्वनाथ भुवालका	- जैण्टलमैन
श्री विश्वनाथ मारोठिया	- वैवाहिक स्वर्णजयंती	श्री ओम लड़िया	- वाचिक ईमानदारी
श्री जुगल किशोर जैथलिया	- संयम के स्वर	श्री जयगोविन्द इन्दौरिया	- ऊँचा ग्राफ
श्री गीतेश शर्मा	- विपक्ष	डॉ. जुगल किशोर सराफ	- बुलन्दी पर
श्री रघु मोदी	- भरी-तिजौरी	श्री कैलाश प्र. झुनझुनवाला(पटना)	- परामर्श दाता
श्री बालकृष्ण डालमिया	- सुहानी यादें	श्री नन्दलाल सिंघानिया	- सही मार्ग
श्री सुबीर पोद्दार	- बहु आई है	श्री चम्पालाल सरावगी	- भला करता चल
श्री महेश कुमार सहारिया	- जकार्ता से बेजिंग तक	श्री विश्वनाथ सराफ	- कुछ करना चाहता हूँ
श्री पी.के. लीला	- हिसाब-किताब पक्का	श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया (क्षेधर)	- मैं भी हूँ
श्री पवन जैन	- मोर्चा जीता	श्री मुकुन्द दास माहेश्वरी(जबलपुर)	- कहां खो गये
श्री महावीर प्रसाद नारसरिया	- क्या जीवन था	श्री रमेश कुमार गर्ग (जबलपुर)	- चौटाला की जय
श्री राजेश खेतान	- नयी ताकत	श्री रमेश कुमार बंग (हैदरावाद)	- महेश बैंक के खजांची
श्री कमल गांधी	- कदम कदम बढ़ाये जा	श्री संतोष कुमार हरलालका	- मेम्बरशीप
श्री हर्ष नेवटिया	- आमने-सामने	श्री नन्द किशोर अग्रवाल	- लाल सलाम
श्री हरिमोहन बांगड़	- जीना कोई इनसे सीखे	श्री राजकुमार बोथरा	- पानी पिलाता हूँ
श्री प्रेमचन्द सुरेलिया	- प्रेमी-जीव	श्री विनोद सराफ	- युवा-धर्म
श्री पुस्कर लाल केडिया	- दुःखी मन	श्री मनमोहन गाड़ोदिया	- हाफ पैन्ट
श्री अजय रुंगटा	- चैम्बर किंग मेकर	श्री केशरीकान्त शर्मा (राजस्थान)	- राजस्थानी व्याकरण
श्री अजय मारू	- राजनीति का चक्कर	श्री ताऊ शेखावाटी (राजस्थान)	- पधारो म्हारे देश
श्री जे. पी. चौधरी	- विवाह के पचास वर्ष	श्री नीलमणि राठी	- संसार का आना-जाना
श्री संजय बुधिया	- यस दीदी	श्री विरेन्द्र प्रसाद धोका (महाराष्ट्र)	- किंग मेकर
श्री राधेश्याम गोयनका	- चक्कर में	श्री मुकुन्द रुँगटा	- भाई साहब
श्री रवि पोद्दार	- जय जयकार	श्री अतुल चूड़ीवाल	- भलामानुस
श्री महेन्द्र जालान	- मेरी बात सुनो	श्री पी.डी. तुलस्यान	- मेरा दिल मेरी आवाज

श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल - सफल नेतृत्व
श्री रवीन्द्र चमड़िया - शिक्षा दान महा दान

महिलाये –

श्रीमती विमला डोकानिया - सभानैत्री
श्रीमती पुष्पा चोपड़ा - मेरी सुनो
श्रीमती सुशीला चनानी - कवियत्री
श्रीमती सरला माहेश्वरी - बीतेदीन
श्रीमती मीना देवी पुरोहित - सफलता के नये आयाम
श्रीमती सुनीता झंवर - विजय के पथ
सुश्री श्वेता इन्दौरिया - उभरता नेतृत्व

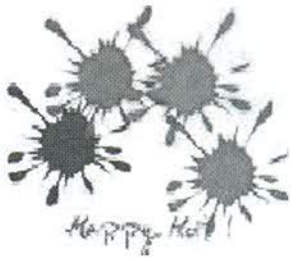

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सूचना

सभी अखिल भारतीय समिति व कार्यकारिणी समिति के सदस्यों की सेवा में

प्रिय महोदय,

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की सर्वोच्च नीति निर्धारक अखिल भारतीय समिति एवं कार्यकारिणी समिति की संयुक्त बैठक आगामी रविवार, ८ अप्रैल २०१२ को प्रातः ११ बजे से सम्मेलन के नवगठित प्रांत उत्तराखण्ड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के आतिथ्य में तीर्थनगरी हरिद्वार में निम्नलिखित विषयों पर विचारार्थ आयोजित की गई है।

सभा की अध्यक्षता सम्मेलन सभापति श्री हरिप्रसाद कानोड़िया करेंगे।

आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थित है।

भवदीय,
संतोष सराफ
राष्ट्रीय महामंत्री
०९८३०० २१३१९

विचारार्थ विषय :

१. अध्यक्ष का उद्‌बोधन
२. गत बैठकों की कार्यवाही पारित करना
३. महामंत्री की रपट
४. आर्थिक स्थिति की समीक्षा
५. समाज सुधा, संगठन एवं कार्यक्रम सम्बन्धी प्रस्तावों पर विचार-विमर्श
६. विविध – अध्यक्ष की अनुमति से

नोट : सभी सदस्यों से अनुरोध है कि कृपया वे विस्तृत जानकारी हेतु एवं अपने आगमन एवं प्रस्थान सम्बन्धी पूर्व सुचना के देने के लिए संयुक्त राष्ट्रीय मंत्री श्री संजय हरलालका (मोबाईल : ०९८३०० ८३३१९ अथवा ०९८०४१ ५४११५) तथा उत्तराखण्ड प्रांत के अध्यक्ष श्री रणजीत जालान (मोबाईल : ०९८९७५ ८३२५८) से सम्पर्क करने की कृपा करें जिससे कि आवश्यकतानुसार निवास आदि की व्यवस्था की जा सके।

कविता

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस (८ मार्च) के उपलक्ष्य पर -

नई सदी की तुम हो नारी

– श्यामसुन्दर बगड़िया

किसने अबला तुझे कहा है
आँचल में तो दूध भरा है
अगर आँख से नीर बहा है,
उसे पोंछ तुम हो खुद्दारी।१।

नहीं नुमाइश गजरा केवल
बिंदी चूड़ी कजरा केवल
नूपुर बिछुआ नखरा केवल,
प्रेमधाम तुम हो किलकारी।२।

हर मंजिल आसान करेगी
नारी अब तूफान बढ़ेगी
हर बाधा सोपान बनेगी,
हिम्मत वाली तुम हो नारी।३।

नारी तुम धधकी ज्वाला हो
इस युग की काल कराला हो
विश्व पटल तेजस बाला हो,
अमित शक्ति तुम हो हुँकारी।४।

नारी तुम हो लक्ष्मी रूपा
नारी तुम हो विद्या रूपा
नारी तुम हो दुर्गा रूपा,
त्रिगुण सम्पदा तुम हो न्यारी।५।

नर नारी मिल एक व्यक्ति है
नर नारी सम्पूर्ण सृष्टि है
नर नारी सहचरी दृष्टि है,
नर नारी मिल हो फुलवारी।६।

२०, गणेशचन्द्र एवेन्यू
कोलकाता - ७०० ०१३

SMS की दुनिया

देश-दुनिया-समाज के घटनाक्रमों पर बेहतरीन समाज की उपज का जायका आपको घर बैठे SMS पर मिलता है। कुछ को आप तुरन्त Delete करते है तो कुछ को मित्रो को Forward करते है। SMS बन गया है अपने अच्छे-बुरे दिलचस्प विचारों को सीधे आपके पास पहुंचाने का नायाब तरीका।

SMS की दुनिया में हम पाठकों से मजेदार, जायकेदार, तेज-तर्रार SMS समाज विकास को Forward करने के लिये आमंत्रित करते है जिन्हें हम Sender के नाम के साथ प्रकाशित करना चाहेंगे।

– सम्पादक, समाज विकास

ऐ हवा दोस्त को पैगाम देना।
खुशी का दिन हँसी की शाम देना।
जब वो पढ़े प्यार से मेरा एसएमएस
तो उसके चेहरे पर प्यार की मुस्कान देना।

• • •

"Never give a chance to anyone to Snatch your smile".
Remember.....!
The world is for u
u r not for the world.....
Be special always.....!

• • •

Some Times Be Blind to the faults of others
It brings peace in our life.
Coz People wont change.
We got to change our way of accepting others

• • •

पत्नी - लो लाईट चली गयी।
सरदार - लाइट ही तो गई है, फेन तो चालू रख
पत्नी - फिर वही सरदारों वाली बात,
अगर फेन चालू किया तो मोमबत्ती बुझ न जाएगी।

• • •

Train में Journey कर रहे थे दो अजनबी।
पहला– तुमने कभी भूत देखा है?
दूसरा .... तब तक पहला चलती ट्रेन से गायब हो गया।

नाव में सवार है चार लोग।
एक अंग्रेज दूसरा मुसलमान, तीसरा हिन्दुस्तानी और चौथा बंगाली।
नाव डगमगायी, सबने अपने खुदा को पुकारा।
देवदूत अंग्रेज और मुसलमान को तो सुरक्षित ले गए।
हिन्दुस्तानी के भगवान राम, कृष्ण, हनुमान दुर्गा, शिव, आपस में ही उलझे रहे।
और मदद को कोई नहीं आया।
नाव डूब गयी। बंगाली बाबु मझधार में.....
चिल्लाया - माँ काली आमाके बाचाओ
माँ आकर कत्थक करने लगी।।
बंगाली - ऐटा कि माँ, आमाके बाचाओ
माँ - तुम लोग मेरा विसर्जन में ऐसा ही डिस्को करता।
है ना, अभी तुम्हारा विसर्जन है।

होली गीत

आज भायला! होळी है

– ताऊ शेखावाटी

होळी रो हुड़दंग मचाती
मिलै जिकै पर रंग लगाती
ढोल, नगाड़ा, चंग बजाती
धमाल, रसियो, फागण गाती।

मीठी बंसी तान सुणाती
छम-छम घूघरिया झमकाती
ताल मिलाती, धूम मचाती
नुवीं बींनण्याँ रै मन भाती।

गळी-गळी में धूम रयी आ
मदमस्ताँ री टोळी है।
आज्या थोड़ी भाँग छाणल्याँ
आज भायला! होळी है।

होळी खेलाँ बोल्यो देवर
भाभी बोली – नो-नो नेवर
पाछैं होळी री बात करो
पै'ल्याँ मँगवाकै दो घेवर।

पण देवरियो दर नाँ मानीं
मारी भर-भरकै पिचकारी
रस बरसण लाग्यो भाभी रो
भीज्यो लहँगो, चोली, साड़ी।

तन भीज गयो, मन भीज गयो
भाभी पर मस्ती छांण लगी
'कोरड़ो' पकड़कै हाथाँ में
देवरिए रै मचकांण लगी।

ई धींगामस्ती में देखों
भाभी री फटगी चोली है।
देवरियो बोल्यो – माफ करो
देखो भाभीसा! होळी है।

निज भासा में गिट-पिट करता
गौरा-चिट्टा, लांबा-चौड़ा
जैपुर री चौपड़ पर होळी
खेलै छै अंग्रेजी जोड़ा।

लियाँ केमरो घूम रया है
पीयोड़ा सा झूम रया है
कई जणा तो अै हिन्दी भी
जाणै है जी! थोड़ा-थोड़ा।

मैं पूछ्यो-कैसा लगता है?
बै बोल्या-अच्छा लगटा है
भोट अच्चा है, जौली है।
मैं बोल्यो- 'दिस' होली है।

इक पाड़ोसी म्हारो होळी
ताई स्यूँ खेलण आ बैठ्यो
लेय'र गुलाल झट ताई रै
गालाँ पर हाथ फिरा बैठ्यो।

बा बाँह पकड़कै झट बीं री
गुद्दी में ल्हांफा दौ मार्‌या
बोली – ले तन्नैं तो होळी
मैं खिलवाऊँ रै रामार्‌या!

मैं हीं ल्हादी के तनैं करी
आ मेरै सूँ टसकोळी है
बो थूक मुट्ठियाँ में भाज्यो
घर जाय टाट पंपोली है।

ताई बीं नैं हेलो भार्‌यो
क्यूँ और खेलसी के होळी?
बो बोल्यो- मरणो थोड़ो है
जो पड़'गी बा ही होळी है।
मैं बोल्यो भाया! होळी है।

३२, जवाहर नगर,
सवाई माधोपुर - ३२२००१ (राज.)

प्रान्तीय समाचार

उत्तराखण्ड

गणतंत्र दिवस पर निःशुल्क जाँच शिविर

गत २५/१/१२ एवं २६/१/१२ को उत्तराखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन इण्डस्ट्रीयल एरीया, हरिद्वार में सम्पन्न हुआ। इस कैम्प में १०८३ मरीजों की जाँच हुई। इस में दन्त रोग, हृदय रोग, आंख रोग, हड्डी रोग आदि की जाँच की गई।

इसके साथ ही दवाईयों का भी मुफ्त वितरण किया गया। सूचना रंजीत जालान (अध्यक्ष) ने दी।

कानपुर शाखा

अग्रवाल मारवाड़ी वेबसाइट शुरू

हमारी संस्था के सम्मानित सदस्य मनोज अग्रवाल द्वारा निःशुल्क एक वेबसाइट www.agarwalmarwari. com के नाम से शुरू की गयी है। इस वेबसाइट में अग्रवाल मारवाड़ी डॉटा, matrimonial, Legal Advice & Placement की सुविधा उपलब्ध है। उपरोक्त सभी सेवायें निःशुल्क है। सूचना सत्यनारायण सिहांनिया (अध्यक्ष) ने दी।

प्रान्तीय समाचार

छत्तीसगढ़ मारवाड़ी सम्मेलन

कम्बल व बेबी किट का वितरण

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वार मकर संक्राति के अवसर पर रायपुर की त्रिमुर्ति नगर, फाफाडीह की गरीब बस्तियों में

कम्बल का वितरण किया गया। फेडरेशन के अध्यक्ष रामानंद अग्रवाल व महासचिव घनश्याम पोद्दार ने गरीबों के हितार्थ कम्बल वितरण के अलावा सरकारी अस्पतालों में बच्चों को ऊनी कपड़ा प्रदान करने की घोषणा की। मौके पर भारी संख्या में लोग उपस्थित थे। तदोपरांत राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर संतोषी नगर की गरीब वस्तियों में कम्बल वितरण किया गया। मौके पर वार्ड पार्षद अमित दास व बस्ती के गणमान्य व्यक्तियों के अलावा संस्था की महिला विंग व अन्य सदस्य भी भारी संख्या में उपस्थित थे।

प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा जेल रोड स्थित शासकीय अम्बेडकर अस्पताल (मेकाहारा) में नवजात बच्चों की सुरक्षा व

उनके लालन-पालन को सुदृढ़ बनाये जाने की दिशा में एक कदम उठाते हुए बेबीकिट, जिसमें दो शर्ट, चार चड्डी, एक ओढ़ने व एक बिछाने के कपड़े वितरण किया गया। सम्मेलन के अध्यक्ष रामानंद अग्रवाल व महासचिव घनश्याम पोद्दार ने गरीब बच्चों (नवजात शिशु) को समय-समय पर बेबीकिट प्रदान करने की घोषणा की। बेबीकिट का वितरण एक माह के बच्चों से लेकर एक सप्ताह तक के बच्चों को प्रदान किया गया।

इस अवसर पर काफी संख्या में फेडरेशन के सदस्य व पदाधिकारी उपस्थित थे।

छत्तीसगढ़

प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रदेश अध्यक्ष रामानंद अग्रवाल एवं प्रदेश सचिव घनश्याम पोद्दार निर्वाचित

छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की एक बैठक में सर्वसम्मति से प्रदेश अध्यक्ष रामानंद अग्रवाल व प्रदेश महामंत्री घनश्याम पोद्दार को बनाया गया। कोषाध्यक्ष कपिल नारायण अग्रवाल, प्रांतीय उपाध्यक्ष इंदरचंद धाड़ीवाल व लोकेश कावड़िया के अलावा सह सचिव के रूप में सत्येन्द्र अग्रवाल की नियुक्ति की गई है। राष्ट्रीय प्रतिनिधि के रूप में डॉ. अरुण हरितवाल-रायपुर, गनपतराय-भिलाई, अशोक जैन-रायपुर, अनिल अग्रवाल-जशपुर, अजय केडिया-सरगुजा, राजकुमार सुल्तानिया-विलासपुर, फूलचंद गोलछा - धमतरी, श्याम सोमानी-जगदलपुर व अनिता खंडेलवाल को जयपुर का प्रतिनिधि नियुक्त किया गया है। कार्यकारिणी सदस्यों में महेश बिड़ला, पवन अग्रवाल, गोकुल दास डागा, संतोष तिवारी, सुभाष अग्रवाल, कमल बैद, प्रवीण अग्रवाल, नवीन खंडेलवाल, मदन तालेड़ा, सोहनलाल डागा, बी.एल. प्रजापति, रचना अग्रवाल व भगवती अग्रवाल को शामिल किया गया है। बैठक के दौरान इस बात का निर्णय लिया गया कि प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा प्रदेश भर का दौरा कर जिला स्तर पर एक उपाध्यक्ष व दो महामंत्री व कार्यकारिणी का गठन करने के साथ ही सामाजिक कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान कर उन्हें सेवा के कार्यक्रम आयोजित करने के लिए प्रेरित किया जावेगा।

आपणी भासा राजस्थानी

– शम्भु चौधरी

राजपुताना अर्थात राजपुतों का देश, राणा प्रताप, सांगा, रानी पद्मणी और पद्मावती का देश राजस्थान, वीरों के कण-कण से चमके, जौहर से धरती जो थड़के, आन-बान और शान जो देश में भर दे। ऐसा राजस्थान! आज अपनी भाषा की पहचान के लिए तड़प रहा है।

धरती धौरां री.. एवं **पातल और पीथल** की रचना करने वाले अमर कवि स्व. कन्हैयालाल सेठिया ने अपने जीवन काल में राजस्थानी भाषा की अळख जगाने के लिए कई गीतों की रचना की और जीवनपर्यन्त राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए संघर्षशील रहे। पिछले दिनों मुझे राजस्थान जाने का काम पड़ा। इस यात्रा के दौरान मेरे राजस्थानी भाषा के अनुभव को एक कविता के माध्यम से व्यक्त कर रहा हूँ–

बोबां'रो दूध पिलायो सैंणै/मांचा म खुब खिलायो सैं'णै
बाबू'री फाट'री धोती,
पोतड़ा में सुलांयो सैं'णै/आज मेरी साड़ी भी अब
गई सग्ळी फाट...।
रुक'रे बोली.../सुण मेरी इक बात!
अन्तिम सांसां लेती बोळी/आपणी भासा राजस्थानी।

इस संदर्भ में देश के प्रख्यात भाषाविद् स्व. डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी के अनुसार "पुरानी मारवाड़ी" से तात्पर्य 'मुडिया' जिसका शाब्दीक अर्थ मारवाड़ी भाषा अथवा 'महाजनी' से था और जिसकी लिपि "मुडिया" मानी जाती थी, हालांकि सन् १९९० के बाद इसका प्रचलन प्रायः लुप्त सा हो चुका है। कारण कम्प्युटर युग का तेजी से प्रवेश हो जाने से मारवाड़ी प्रतिष्ठानों से 'मुनिम' अर्थात खाता-वही लिखने वाले लोगों की परम्परा का समाप्त होना माना जाना चाहिए। इससे पूर्व देश के हजारों मारवाड़ी प्रतिष्ठानों में इसका 'खाता-वही' में प्रयोग होता था।

इन दिनों मोडिया लिपि का प्रचलन प्रायः समाप्त हो चुका है। मोडिया लिपि की प्राचीनता के विषय में कई विद्वान इसे '**राजा टोडरमल**' की देन मानते हैं। आज भी जमीनों के पुराने पट्टे मोडिया में लिखे मिल जाते हैं। मोडिया की प्राचीनता इस बात से भी प्रमाणित होती है कि इसके बाद जो भाषायें विकसित हुई जैसे गुजराती, मराठी आदि उसमें देवनागरी के सभी स्वरों के प्रयोग पाये जाते हैं जबकि मोडिया लिपि में 'स्वर' का प्रमाण नहीं मिलता।

आज हम जिस राजस्थानी भाषा की बात करते है उसमें 'मुडिया लिपि' की जगह 'देवनागरी लिपि' वर्णमाला का प्रयोग होने लगा है।

वर्तमान में जिसे आधुनिक राजस्थानी कहा जाता है इनमें देवनागरी लिपि का प्रचलन हो चुका है फिर भी राजस्थान के लिपि विद्वानों व शोधकर्ताओं का मानना है कि मोडिया लिपि में सुधार कर इसके प्रचलन पर ही काम किया जा सकता है। जिस प्रकार गुजराती या मराठी लिपि में हुआ है।

"राजस्थान विधानसभा द्वारा २५ अगस्त २००३ को, राजस्थानी भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित करने का एक संकल्प रूपी प्रस्ताव पारित किया गया था, जिसमें कहा गया कि राजस्थान विधानसभा के सभी सदस्य सर्वसम्मति से यह संकल्प करते हैं कि राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किया जाए। राजस्थानी भाषा में विभिन्न जिलों में बोली जाने वाली भाषा या बोलियाँ यथा ब्रज, हाड़ोती, बागड़ी, ढूँढ़ाड़ी, मेवाड़ी, मारवाड़ी, मालवी, शेखावटी आदि शामिल हैं।"

यदि हम इस प्रस्ताव की गम्भीरता पर विचार करें तो, हम पाते हैं कि यह प्रस्ताव खुद में अपूर्ण और विवादित है। "इसमें कहीं भी स्पष्ट नहीं है कि हम किस भाषा को राजस्थानी भाषा के रूप में मान्यता दिलाना चाहते हैं।" एक साथ बहुत सारी बोलियों को मिलाकर विषय को अधिक उलझा दिया गया है।

इस संदर्भ में राजस्थान के ही भाषा विद्वान डॉ. उदयवीर शर्मा ने बहुत स्पष्ट रूप से कहा है कि **"राजस्थानी भासा री एकता दीढ़ सूं देखां जणां कैवणो बणै कै खरा-खरी में मारवाड़ी नै ही खरी-सम्पूरी राजस्थानी समझणो-मानणो चाइजै क्यूं कै इण में प्रचुर मात्रा में साहत्य-सामग्री परम्परा सूं ही मौजूद है।"**

योग व रोजगार

योग स्वास्थ्य ही नहीं करियर की नजर से भी देखें

– संजीव भनोत

भगवद्गीता में योग के सबसे सरल और व्यावहारिक रूप को अभिव्यक्त किया गया है - योगः कर्मस्तु कौशलम्। यानी कर्म की कुशलता ही योग है। कर्म की कुशलता के लिए जितने उपाय हैं, वे सब इसमें शामिल हैं। योग संबंधी सबसे प्राचीन भारतीय ग्रंथ 'प्रांतजलि योग सूत्र' का रचनाकाल अज्ञात है, ऐसा माना जाता है कि संस्कृत भाषा के पाणिनी कृत व्याकरण 'अष्टाध्यायी' पर महाभाष्य नामक टीका तथा आयुर्वेद के ग्रंथ 'चरक संहिता' के रचनाकार भी आचार्य पातंजलि हैं। हालांकि इन तथ्यों के बारे में मतैक्य नहीं है, लेकिन योग की शारीरिक स्वास्थ्य में वृद्धि की क्षमता और उसकी रोग निवारक शक्ति के संबंध में प्रायः कोई मतभेद नहीं है। शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक एकाग्रता के लिए योग की विधियों का इस्तेमाल सिर्फ साधु-संन्यासी ही नहीं, साधारण भारतीय जन भी सदियों से करते आये हैं। हाल के वर्षों में योग के आसनों और योग की उपचारक शक्ति ने विदेशियों को भी अपनी ओर आकर्षित किया है। भारत में पर्यटन उद्योग के विकास के साथ-साथ योग एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति और आधुनिक जीवन के तनावों, दबावों आदि से मुक्ति के एक कारगर तरीके के रूप में पूरी दुनिया में लोकप्रिय हुआ है। आज स्थिति यह है कि योग की तकनीकों के विदेशों में पेटेंट तक हो रहे हैं।

जाहिर है, इन बदलते हालात में भारत जैसा देश योग के जरिए बेशुमार फायदे उठा सकता है, क्योंकि योग का जन्म तो इसी जमीन पर हुआ है। योग पर और ध्यान दिया जाए, तो आगे चलकर हम पायेंगे कि योग हमें पैसा कमाने के एक बेहतर जरिए की ओर ले जा सकता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि योग की जरूरत जीवन के हर क्षेत्र में बढ़ रही है। एक मिसाल राजस्थान में मिलती है।

कुछ साल पहले राजस्थान के शिक्षा विभाग में योग को लेकर एक पहल की गई थी। वहां के स्कूलों में पहले से कार्यरत व्यायाम शिक्षकों को राज्य सरकार ने योग की ट्रेनिंग दिलाई, ताकि वे स्कूली बच्चों को योग के जरिए बेहतर स्वास्थ्य और मानसिक एकाग्रता प्राप्त करने में मदद करें। राजस्थान सरकार ने अपने पुलिस अधिकारियों के लिए भी योग शिविर आयोजित किए। इनका मकसद पुलिस अधिकारियों को शारीरिक-मानसिक रूप से स्वस्थ बनाना ही नहीं, बल्कि उन्हें रोजमर्रा के तनावों से निजात पाने के उपाय सिखाना था। इन उदाहरणों से साबित होता है कि योग की आज हमें कहां और कितनी जरूरत है।

सिर्फ भारत में ही नहीं, विदेशों में भी योग को लेकर एक नई दिलचस्पी जग रही है। विदेशों में हमारे कई योग गुरु पहले से ही काम कर रहे हैं और योग गुरु बाबा रामदेव के शिविर भी तमाम मुल्कों में लग रहे हैं। बात सिर्फ चंद योग गुरुओं के शिविरों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि योग की जो नई डिमांड पैदा हुई है, उसमें वैसे ट्रेंड योग शिक्षकों की भी जरूरत है, जिनका बेशक बड़ा नाम नहीं है, पर वे कुशल योग ट्रेनर हैं। यूरोप और अमेरिका के अलावा चीन व सिंगापुर जैसे देशों में भी योग शिक्षकों की मांग बढ़ रही है। ये योग ट्रेनर भारतीय हों, तो कहना ही क्या।

बेशक, योग के प्रति बढ़ती दिलचस्पी और स्वास्थ्य जागरूकता के नए रुझानों के कारण योग शिक्षक के लिए कार्य अवसरों में दिनों-दिन बढ़ोतरी हो रही है, लेकिन जरूरत के मुताबिक हमारे पास योग शिक्षक हैं ही कितने?

हमारे देश में ऐसी कोई केन्द्रीय संस्था नहीं, है जो इन योग शिक्षकों के प्रशिक्षण की गुणवत्ता और प्लेसमेंट जैसे मामलों की निगरानी करे। हालांकि दिल्ली स्थित भारतीय योग संस्थान और विश्वायतन, मुंगेर स्थित बिहार स्कूल ऑफ योगा, नय्यर डैम (केरल) का शिवानन्द आश्रम, पुणे स्थित वी. के. एस. आयंगर स्कूल और पट्टाभि जायसे जैसी दर्जनों संस्थाएं यहां निजी तौर पर काम कर रही है और उन्हीं से भारतीय योग शिक्षक तैयार होकर निकलते हैं। पर एक केन्द्रीय व्यवस्था की जरूरत तो तव भी है।

ऐसा नहीं कि योग के शिक्षक विदेशों में ही जरूरी हों। भारत के शहरों और कस्वों में भी योग वतौर फैशन प्रचलन में आ चुका है। आगे चलकर जव मेडिकल टूरिजम पूरे उफान पर होगा और विदेशों से लोग चिकित्सा के लिए बड़ी संख्या में भारत का रुख करना शुरू करेंगे, तो योग एक वेहतर करियर संभावना वाला क्षेत्र बनकर सामने आएगा। फिलहाल एक योग शिक्षक हर घंटे के लिए २५० से १८०० रुपये तक कमा सकता है और इस तरह उनकी मासिक आय १० से ५० हजार रुपये तक हो सकती है। योग शिक्षक सामुदायिक केन्द्रों तथा सार्वजनिक पार्कों में सशुल्क योग शिविरों का आयोजन करते हैं। वे स्कूलों, कॉलेजों तथा अन्य संगठनों में योग सिखाते हैं। योग शिक्षक का कार्यक्षेत्र विस्तृत है। वे जनसेवा के मकसद से योग प्रचारक बनने से लेकर किसी मंदिर, अस्पताल, जिम या खेल संस्थान आदि कहीं भी अपने लिए आजीविका ढूंढ सकते हैं।

योग को सिर्फ करियर की नजर से या आम जन के स्वास्थ्य में सुधार की नजर से ही नहीं, बल्कि देश की चिकित्सा निर्भरता के पैमाने से भी देखने की जरूरत है। हमारी सशस्त्र सेनाएं, अर्द्धसैनिक बल आदि भी अपने जवानों-अधिकारियों की फिटनेस के लिए योग को अपना सकते हैं। ओलंपिक अथवा अन्य अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्द्धाओं में भाग लेने वाले खिलाड़ियों के लिए तो योग एक वरदान साबित हो सकता है। अत्यधिक दवाव और उच्चतर जिम्मेदारी के पदों पर कार्य करने वाले हमारे लोगों तथा वैज्ञानिकों, डॉक्टरों, इंजीनियरों आदि को भी योग से लाभान्वित करने की कोशिश करनी चाहिए। योग शिविरों का आयोजन शहरों और गांवों के वीच विकास के अंतर की खाई को पाटने का एक साधन हो सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की सुचारु आपूर्ति और उनका प्रवंधन आज भी एक वड़ी चुनौती है। चिकित्सा संस्थानों का ग्रामीण और नगरीय क्षेत्र में विभाजन समानुपातिक नहीं है। ऐसे में योग जैसी स्वावलंवी और न्यूनतम उपकरणों पर आधारित तकनीक ग्रामीणों का स्वास्थ्य वरकरार रखने में कारगर भूमिका निभा सकती है। वहरहाल, यह मात्र संयोग नहीं है कि आज भी ज्यादातर योग विशेषज्ञ और योग शिक्षक देश के ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं और वे शहरों में काम करते हैं।●

साभार : समृद्ध सुखी परिवार

मातृभाषा राजस्थानी

उगम और विकास

– **श्यामसुंदर टावरी,** अमरावती

मानव को मिला अदभूत वरदान है भाषा। भावना व्यक्ति करने का साधन है भाषा। भाषा जितनी प्रभावी होगी उतनी ही प्रभावी अभिव्यक्ति होगी। माता और भाषा को हम माँ के रूप में संबोधित करते हैं। माता जिस भाषा में संस्कार डालती है उसे हम मातृभाषा कहते हैं। इसलिये माँ की तरह मातृभाषा राजस्थानी का अभिमान प्रत्येक राजस्थानी को होना चाहिये। भाषा विचारों के आदान-प्रदान करने का माध्यम है। और मातृभाषा उसका सुलभ साधन है। आवश्यक है केवल आत्मविश्वास, स्वाभिमान की। सभी राजस्थानियों के लिए फिर वे देश-विदेश के किसी भी कोने में जाकर वास्तव्य कर रहे हों राजस्थानी भाषा ही मातृभाषा है। जिस तरह तीर्थों मे काशी, व्रतों में एकादसी है उसी तरह भाषाओं में राजस्थानी भाषा सर्वोत्तम है। उस पर हमें गौरव है। भावना विकार याने प्रेम, माया, गुस्सा, नाराजगी व्यक्त करने में मातृभाषा का प्रयाग स्वाभाविक प्रकृति है।

उगम : राजस्थानी भाषा का उगम वैदिक भाषा संस्कृत जो हमारी प्राकृत भाषा है उससे हुआ है। कहा तो यहां तक जाता है कि हिन्दी भाषा का उगम स्थान भी राजस्थानी भाषा है। किसी भाषा के निर्मिती का विचार करते समय वह भाषा कब निर्माण हुई, किस भाषा से हूई, उत्पत्ति के पीछे के कारण मिमांसा और यह सब निश्चित करने साहित्य ग्रंथ, लोक परंपरा, अन्य भाषा में उसका उल्लेख, शिलालेख, ताम्रपत्र, सिक्के, भोजपत्र, ताड़पत्र आदि का आधार संशोधकों को लेना पड़ता है।

लिपी : राजस्थानी भाषा देवनागरी लिपी में लिखी जाती है। इस पर मोडी अक्षरों का प्रभाव रहा। १९ वें शतक में मुद्रण व्यवस्था पश्चिम से आनेपर मोडी लिपी लुप्त होते गई। राजस्थानी लिपी में बाएं से दाएं लिखा जाता है। बाएं से दाएं शिरो रेखा सीधी खींची जाती है और विना कलम उठाये पूरी लाइन लिखी जाती है। संस्कृत, हिन्दी,

मराठी, राजस्थानी आदि भाषाओं की लिपी देवनागरी है। लिपी याने लेखन पद्धति। लिपी का मुख्य गुण याने ध्वनी का प्रतिनिधित्व करना है।

बोली : प्रत्येक भाषा में बोलियों की भरमार होती है। मराठी भाषा में जिस तरह बन्हाडी, नागपुरी, कोंकणी, पुणेरी, खानदेसी, मराठवाड़ी आदि विविध भागों की मराठी बोली है वैसे ही राजस्थानी भाषा में जोधपुरी, बीकानेरी, उदयपुरी आदि है। इसमें किसी तरह का विवाद नहीं। हर बारह कोस पर भाषा बदलती है उसी का यह प्रभाव है। भारत में लगभग २२०० बोलियां बोली जाती है। राजस्थानी भाषा मौखिक है, लिपीबद्ध है उसका अपना शब्दकोष, साहित्य, ग्रंथ, पौराणिक प्रमाण है। राजस्थानी भाषा में कहावतें और मुहावरों का भंडार है। राजस्थानी भाषा उच्च कोटी की, मीठी, सुहावनी है। यही कारण है, राजस्थानी भाषा और संस्कृति की अन्य भाषिक नकल करते हैं।

मातृभाषा और राजभाषा : प्रत्येक राज्य की भाषा को सम्मान, महत्व और शक्ति मिले इसी लिए भाषावार प्रांत कि रचना देश में की गई। उद्देश्य यही की अपने-अपने भाषा का व्यवहार में, राज्य प्रशासन में अधिक से अधिक उपयोग हो। राज्य की जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधानसभा पर नियंत्रण रहता है। राज्य की जनता की इच्छा सर्वोपरी रहती है। राज्य का शासन जनता की भाषा में चलना चाहिये, तभी उसे न्याय मिलेगा। समाज के विभिन्न घटकों को साथ लाने का भाषा एक महत्वपूर्ण माध्यम है। प्रजातंत्र की यही व्यवस्था है। ताकि सामाजिक, राजकीय, आर्थिक, व्यवसायिक, शैक्षणिक और प्रशासनिक संपर्क में सुविधा हो। प्रशासन के साथ ही शिक्षा का माध्यम भी उस प्रदेश की भाषा ही होनी चाहिये।

राजस्थानी भाषा को मान्यता : राजस्थान प्रदेश राजस्थानी भाषिकों का प्रदेश है। स्वाभाविकतः यहां की राजभाषा राजस्थानी होनी चाहिये। राजस्थान विधान सभा ने राजस्थानी भाषा को केन्द्र शासन की मान्यता के लिये सन २००३ में सवसम्मति से एक प्रस्ताव पारित किया था। किंतु स्वयं राज्य शासन ने अपने व्यवहार में राजस्थानी भाषा को अब तक अमल में नहीं लाया है। मतलब साफ है, राजस्थानी भाषा को सोने का मुकुट तो पहनाना चाहते हैं पर स्वयं अपने घर में उसे फटेहाल वस्त्रों में शासन दरबार में हाथ में कटोरा देकर अपना हक मांगने छोड़ रखा है। राजस्थानी भाषा जब तक सिंहासन पर विराजमान नहीं होगी तब तक समाज के पास उसका ज्ञान नहीं पहुँचेगा। समाज का दर्जा भाषा से बनता है। यह काम करना शासन का कर्तव्य बनता है। राजस्थानी भाषा का अपना शब्दकोष है, व्याकरण है फिर भी उसे शासन मान्यता विचाराधीन रहना, अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है।

राजस्थानी भाषा की अवहेलना के दोषी : समस्त राजस्थानियों की मातृभाषा राजस्थानी हैं फिर चाहें वे राजस्थान या राजस्थान से बाहर जाकर कहीं भी बसते हों, इतना ही नहीं कुछ पड़ोसी राज्यों हरियाणा, पंजाब, मालवा में भी बड़े पैमाने में राजस्थानी भाषा का प्रयोग होता है। राजस्थानी भाषा को मान्यता की बात तो सभी करते हैं किंतु अपने बोलचाल में प्रयोग कम करते जा रहे हैं। नई पीढ़ी को अंग्रेजी भाषा में शिक्षा दिलवाना शायद समय की आवश्यकता हो सकती है, किंतु घर में भी अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करना चिंता का विषय है। कई प्रदेशों में वहां की जनता अपनी मातृभाषा का प्रयोग घर में, सार्वजनिक जगहों पर बेहिचक करती है। राजस्थानी ही अपनी भाषा का उपयोग करने में संकोच करता है यह बड़ी शर्मनाक बात है। राजस्थान के रहनेवाले सभी धर्म, पंथ, सम्प्रदाय के लोग राजस्थानी भाषा का ही प्रयोग करते हैं। अन्य प्रदेशों में जाने पर यहां के कलाकार, कारीगर, नाई, रंगरेज सभी राजस्थानी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं।

राजस्थानियों की संख्या : राजस्थान में बसे तथा राजस्थान के बाहर जाकर बसनेवाले एवं पड़ोसी प्रदेश में राजस्थानी भाषिकों की संख्या लगभग १० करोड़ अनुमानित है। लगभग इतनी ही संख्या महाराष्ट्र में मराठी भाषिकों की है। दुनिया में राजस्थानी भाषा बोलनेवालों का क्रमांक १६ वां है तो देश में वे ७ वें स्थान पर है। प्रत्येक को अपनी मातृभाषा प्रिय लगती है। उससे उसका भावनात्मक संबंध होता है। अधिक संख्या में राजस्थानी बोलनेवाले हैं तो यह जितना महत्वपूर्ण नहीं उतना अन्य को यह लगना कि राजस्थानी भाषा समृद्ध है, सक्षम है, इसका विकास होना चाहिये ऐसा लगना। महानगरों-शहरों में भले ही राजस्थानी भाषा का प्रयोग कम हो रहा हों किंतु राजस्थान प्रदेश की ढानियों, कस्बों, गांवो में आज भी शतप्रतिशत राजस्थानी भाषा का अपयोग होता है और यही कारण है वहां राजस्थानी

संस्कृति के दर्शन सहज है। भाषा के माध्यम से ही विशिष्ट जनसमूह की संस्कृति व्यक्त होती है। संस्कृति का धर्म से संबंध होता है। भाषा मरती है तब भाषा बोलनेवालों के समूह की संस्कृति और उसका धर्म का भी लोप होने लगता है। गत वर्षों में राजस्थानी भाषिकों की संख्या लगातार कम होकर ९ करोड़ रह जाने का अनुमान है। यही क्रम जारी रहा तो राजस्थानी, राजस्थानी भाषा, राजस्थानी संस्कृति कायम रहने का संकट उभर सकता है।

भाषिक अल्पसंख्यक होने का प्रमाण : राजस्थानी भाषा कों संविधान की ८ वीं सूची में शामिल करनेपर राष्ट्र की जनगणता में राजस्थानी भाषिकों की जनगणना होगी। इस तरह किस प्रदेश में कितने राजस्थानी है इसका आंकड़ा उपलब्ध होगा। यही आंकड़ा सिद्ध करेगा किस प्रदेश में कौन अल्पभाषिक हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय ८ वीं सूची में १४ भाषाएं थी। आज यह संख्या २२ के ऊपर हो गई हैं। फिर भी राजस्थानी भाषा को स्थान नहीं मिलना यही सद्ध करता है कि सियासत में हमारा आर्थिक योगदान ही चाहिये।

राजस्थानी बोट बैंक : देश में राजस्थानियों के ९ करोड़ वोट हैं। इसके प्रभाव में कुछ भी हासिल किया जा सकता है। जरूरत है एकजुटता, एकता प्रदर्शित करने की। एक गट्ठा मत के प्रवाह में शासन को झुकना ही पड़ेगा। २५ अगस्त २००३ को राजस्थान विधानसभा ने सर्वसम्मति से राजस्थानी भाषा को मान्यता प्रस्ताव पारित किया था। तब मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत थे। आज भी वे इस पद पर हैं। किंतु एक कण भी प्रस्ताव आगे नहीं बढ़ा है। उपराष्ट्रपति पद पर श्री भौरोसिंह शेखावत रहे, आज देश के सर्वोच्च पद पर राजस्थानी विराजमान है। समाज को अपना हक भी नहीं मिला। जब तक राजस्थानियों की उपेक्षा के घातक परिणाम दिखाई नहीं देगें तब तक कुछ होनेवाला नहीं है। क्योंकि सर्वत्र वोट बैंक की राजनीति चल रही है। अधिकारों को पाने तथा राष्ट्र के विकास में भागीदारी सुनिश्चित करने वोट बैंक के रूप में राजस्थानियों को अपना प्रभाव सिद्ध करना होगा, मतदान करने आगे आना होगा तथा राजनीति में सक्रिय भूमिका के लिए अग्रसर होना होगा।

अन्य भाषाओं का ज्ञान : हिन्दी देश की राष्ट्रभाषा हैं, उसका ज्ञान सभी राजस्थानियों को है। अंग्रेजी भाषा पढ़ाई, नौकरी, विदेश से व्यवहार विज्ञान और तकनीकी ज्ञान के लिए जरूरी है। उसी तरह जिस प्रदेश में रहते हैं वहां की स्थानीय भाषा का ज्ञान भी अत्यावश्यक है। ऐसा होने पर ही हम स्थानीय समाज से समरस होंगे। हमारा व्यापार, व्यवसाय व्यवहार सुगमता के साथ चलेगा।

सबसे महत्वपूर्ण है घर में मातृभाषा राजस्थानी का ही प्रयोग हो।

राजस्थानी भाषा के साहित्यकारों, कलाकारों का परिचय और सम्मान निजी तथा सरकारी क्षेत्र में हो रहा है उसे और अधिक प्रचारित किया जाए।

जिला स्तर पर या जहां अधिक संख्या में राजस्थानी रहते हैं उन जगहों पर ग्रंथालय-वाचनालय खोले जाए। वहां राजस्थानी भाषा की किताबें, समाचार पत्र, पत्रिकाए उपलब्ध हों। अप्राप्त प्रकाशन, लुप्त होते जा रहे ग्रंथ की सीड़ी या फोटोकॉपी संग्रह का प्रयास हो।

राजस्थानी भाषा का प्राचीन साहित्य लुप्त होते जा रहा है। राजस्थानी भाषा के प्रचार-प्रसार, विकास उपलब्ध साहत्य, ग्रंथ आदि को सुरक्षित सहेज कर रखने की व्यवस्था करें।

राजस्थानी भाषा और साहित्य का विविध पंथो, सम्प्रदायों में महत्वपूर्ण योगदान है। भाषा का विकास और वृद्धि शब्दों से होती है। सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास जब शब्दों में लिपीबद्ध होता है तो तब वह शतकों-युगों तक टिका रहता हैं।

हमारे नेताओं, जनप्रतिनिधों पर दबाव-प्रभाव डालना होगा ताकि वे राजस्थानी भाषा को शासन मान्यता लिए असरकारक प्रयास करने बाध्य हों। ●

रमेश गोयनका को हेमन्त कुमार अवार्ड

सुप्रसिद्ध गायक 'रमेश गोयनका' को बांगला चलचित्र प्रचार समिति ने कोलकाता में आयोजित एक भव्य समारोह में १२ फरवरी को 'हेमन्त कुमार अवार्ड' प्रदान किया। लाईफटाईम अचीवमेन्ट का मोमेन्टो टालीवुड एवं बालीउड के कलाकारों की उपस्थिति में करतल ध्वनि के बीच सप्तक भट्टाचार्य ने प्रदान किया। यह सम्मान रमेश गोयेनका को विगत चालीस वर्षों से संगीत की सेवा में समर्पित, विशिष्ट उपलब्धि के लिये दिया गया।

पुस्तक समीक्षा

ईश्वरीय शक्तियों और मानवीय प्रवृतियों का सहज बोध

ईश्वरीय शक्तियों और मानवीय प्रवृत्तियों का सहज बोध कराती राम कुमार गोयल की पुस्तक "आप, हम और संसार" सांसारिक दृष्टि से संगृहणीय है। एक उम्र के बाद उम्र-बोध की महत्ता पर लेखक ने बल दिया है। लेखक कहता है कि **"आप, हम और संसार"** देखने में तो सामान्य सा वाक्य है परंतु, वास्तव में यह एक ऐसा ढांचा है जो सभी को एक साथ जोड़ते हुए परस्पर समझने का नजरीया प्रदान करता है। लेखक **संसार** शब्द की व्याख्या उस सम्पूर्णता से करता है जिसमें बृहमांड, पृथ्वी, जीवन, मन-मस्तिष्क, सभ्यता, समाज आदि सभी समाहित है। यहाँ एक बेहद की जीवन संरचन का गहन बोध है। अपनी बात की स्थापना के लिए लेखक ने पुस्तक में भगवान बुद्ध से लेकर अलबर्ट आइंस्टीन एवं महात्मा गांधी से वासवानी तक के जीवन प्रसंगों का उल्लेख किया है। मनोविज्ञान एवं दर्शन शास्त्र के माध्यम से आध्यात्मिक ज्ञान की विवेचना की गयी है। **"आप, हम और संसार"** में लेखक कहता है कि धर्म और विज्ञान जीवन के दो पहिए है, इन्हीं दो पंखों पर सवार होकर मनुष्य ज्ञान के शिखर पर पहुंच जाता है, उसकी आत्मिक उन्नति हो सकती है। लेखक ने पुस्तक के माध्यम से जीवन के कई मूल्यबोधों की विवेचना की है – धर्म और विज्ञान, जीवन में समर्पण के मायने, सभ्यता की कसौटी और सामाजिक जागरूकता, जीवन के आदर्श, बच्चों के मोल, समाजसेवा, मुस्कान, दयाशीलता आदि साधारण से विषयों को भी आध्यात्मिक चेतना उर्जा से परिपक्व करने का प्रयास किया है।

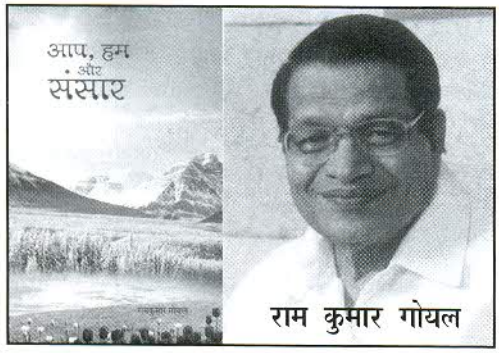

कुल मिलाकर राम कुमार गोयल की १६० पृष्ठीय पुस्तक **"आप, हम और संसार"** पठनीय व संग्रहणीय है।

— अनंतशिव

पुस्तक	: आप, हम और संसार
लेखक	: राम कुमार गोयल
प्रकाशक	: के. रामाकृष्णा, बुकलिंक्स कॉर्पोरेशन नारायणगुड़ा, हैदराबाद
पृष्ठ	: १६०

प्रान्तीय समाचार

कांटाभांजी शाखा

मारवाड़ी युवा मंच द्वारा दो दिवसीय बेडमिंटन प्रतियोगिता

युवाओं के मध्य खेल भावना को जाग्रत करने हेतु मारवाड़ी युवा मंच, कांटाभांजी शाखा द्वारा दो दिवसीय बेडमिंटन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें १६ टीम के ३२ प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे नगर पालिका के पार्षद श्री बरियाम सिंह सालुजा, सम्मानिय अतिथि थे युवा महेन्द्र जैन, डॉ. गोविन्द अग्रवाल, रेल्वे के नंदो बाबु आदि। प्रतियोगिता में आनन्द अग्रवाल व हेमंत मित्तल की जोड़ी पहले एवं दूसरे स्थान पर अमीत जैन व दीपक जैन की जोड़ी रही।

विजेताओं को स्व. किशनलाल जैन स्मृति ट्रॉफी व नगद राशि पुरस्कार के रूप में प्रदान किया गया। अमीत जैन व दीपक जैन की जोड़ी ने नगद राशि को युवा मंच के सेवा कार्य से समर्पित कर दिया।

आयोजन को सफल बनाने में शाखाध्यक्ष सुमित जैन, शाखा मंत्री मयंक जैन, राजेश अग्रवाल, नारायण अग्रवाल, दिपक अग्रवाल, बजरंग जिन्दल, विकाश अग्रवाल, आशीष खेतान, अंकुर जिन्दल, अमित अग्रवाल, मनिष अग्रवाल, विरेन्द्र जैन, आदेश जैन, विनय अग्रवाल, आशीष लाठ, मोहन सोनी, अंकुर अग्रवाल, ब्रजेश मित्तल आदि मारवाड़ी युवा मंच के सभी सदस्यों ने सक्रिय भूमिका निभाई। सूचना युवा मंच के मीडिया प्रभारी राजेश अग्रवाल "हीरा" ने दी।

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

"Educate Morally & Technically"
— Swami Vivekananda

Swami Vivekananda Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

3 Yrs. **BBA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA+ PGPM** ₹ 85,000
3 Yrs. **BCA** ₹ 75,000	2 Yrs. **MBA (Hospital Admin.)** ₹ 95,000

ELIGIBILITY & SELECTION

FOR MBA

- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- ★ APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

FOR BBA & BCA

- 10 + 2 PASSED FROM ANY HIGHER SECONDARY BOARD/COUNCIL

Assistance for placement

Eminent Faculty
Regular / Weekend Classes
AC Classrooms/Hostel

Achieve your Aspiration ...
... be a **Corporate Leader !**

Complimentary Courses with MBA, BBA, BCA :

- Spoken English • Foreign Languages
- Soft Skills Training from HCL - CDC
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development

Other Courses :

- Company Secretaryship • Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi
- NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview
- Certificate Course in Computer Applications
- Advanced Diploma in Financial Management
- Entrepreneurship Development
- Vocational & Technical Training
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examination (Prelim and Main)
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- Diploma in Banking and Finance
- Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I

Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

Unit - I

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in
Website : www.iisdedu.in

Unit - II

9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor
Kolkata- 700017, Ph : 4001 9894
E-Mail : iisdunit2@gmail.com
Website : www.iisdedu.in

मांसाहार से उत्तम है शाकाहार

– सुप्रिया

शाकाहार मांसाहार से उत्तम है यदि उसका भोजन संतुलित है। यदि उसमें वे सबी भोज्य पदार्थ सामिल हैं जो उसे मांसाहार से श्रेष्ठ बनाते हैं।

शाकाहारी यह एक तर्क है वे दीर्घायु होते हैं। दीर्घायु के बहुत से कारण होते हैं। जिनके बारे में अबी पूरी जानकारी नहीं है। इन तर्कों का उल्लेख करने का आशय यही है कि शाकाहार के पक्ष में अनावश्यक और कमजोर तर्क देने से वह कमजो होता है जबकि अब कई ऐसे नये तर्क और प्रमाण उपलब्ध हैं, जो कहते है कि शाकाहार मांसाहार से वेहतर है।

शाकाहार की भी दो किस्में हैं। एक वह जिसमें दूध शामिल नहीं है। कुछ शाकाहारी दरअसल दूध भी नहीं लेते। और दूसर वह जिसमे दूध लिया जाता है। पहली किस्म के शाकाहारियों के लिए पूर्णतः स्वस्थ रहना दूसरों की अपेक्षा कठिन हैं किन्तु असंभव नहीं। इसकी वजह दूध में कैल्शियम का होना है। हाल में हुई खोजों से पता चला है कि शरीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए कैल्शियम बहुत जरूरी है। दूध के बगैर शाकाहारियों के शरीर में इस खनिज की कमी होने की काफी संभावनाएं रहती हैं। यूं कैल्शियम हरी पत्तियों में भी होता हैं, पर वह ठीक से हजम नहीं होता। दूध का कैल्शियम शरीर को अधिक आसानी से उपलब्ध होता है। दरअसल अब मांसाहारियों के लिए दूध पीने की सिफारिश की जात हैं। मांसाहार के पक्षधरों का सबसे बबड़ा दावा पहले यह होता था कि मांस, अण्डा, मछली आदि का प्रोटीन अनाज और दालों के प्रोटीन से बेहतर होता है। पर अब यह साबित हो गया है कि यदि आप तीन या चार भाग अनाज (गेहूं, चावल, बाजरा, ज्वार) तथा एक भाग दाल मिलाकर भोजन खायें तो इनका संयुक्त प्रोटीन मांस के प्रोटीन मांस के प्रोटीन के बराबर अच्छा होता है, यानी इस संयुक्त प्रोटीन में दस आवश्यक एमिनो एसिड उपलब्ध होते हैं जो स्वस्थ शरीर के लिए अनिवार्य है। ध्यान देने की बात है कि इस तरह

का संयुक्त प्रोटीन ही मांस के प्रोटीन का मुकाबला कर सकता है। यदि दाल नहीं है तो आप उसके स्थान पर दूध, दही, पनीर का इस्तेमाल कर सकते हैं। अनाज और दूध का सम्मिश्रण भी मांस के बहाबर अच्छा प्रोटीन उपलब्ध कराता हैं। किन्तु केवल रोटी, पराठां या पूड़ी या चावल के साथ सब्जी खाने में आपका शरीर कमजोर होगा क्योंकि उसे दस आवश्यक अमिनो एसिड वाले प्रोटीन नहीं प्राप्त होंगे। वस्तुतः सबसे उत्तम भोजन वह है जिसमें फलों, सब्जियों के अलावा अनाज (गेहूं, चावल आदि) दालों और दूध (दही या पनीर) सभी शामिल हो। शाकाहारी भोजन में दूध की थोड़ी मात्रा भी शामिल होजाने से प्रोटीन की बायलॉजिकल वैल्यू (गुण) बहुत बढ़ जाती हैं।

आजकल शाकाहार के पक्ष में पश्चिम में जो आंदोलन जोर पकड़ रहा है, उसका कारण हैं मांसाहार से कैंसर, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप आदि रोगों का निकट का संबंध।

इसकी पहली वजह है मांसाहारी भोजन में फाइबर (रेशों) की कमी। आजकल पश्चिम के अनेक मांसाहारी ऊपर से फाइबर वाले पदार्थ खाने लगे हैं। लेकिन यह काफी नहीं है।

शाकाहारी भोजन में खास तौर से साबुत अनाजों, दालों, फलों तता सब्जियों में फाइबर पर्याप्त मात्रा में होता है। भोजन में इसकी पर्याप्त मात्रा रोगों को होने से रोकती है। किन्तु धुने हुए मिल के आटे, मिल के चावल अधिक पकायी गयी और तली गयी सब्जियां खाने से जरूरी फाइबर नहीं मिलता।

अव यह प्रमाणित हो चुका है कि शरीर के लिए ज्यादा प्रोटीन न केवल अनावश्यक है बल्कि नुकसानदायक भी है। वैज्ञानिक कहते रहते हैं और हमेशा अधिक प्रोटीन खाने से शरीर में थकावट और कमजोरी आती हैं। इसके विपरीत अधिक कार्बोहाइड्रेट वाले भोजन (गेहूं, चावल, सब्जियां) शरीर को अधिक स्फूर्ति देते हैं और बुढ़ापा दूर रखने में भी मदद करते हैं। मांसाहारियों का यह अभिशाप है कि उनके शरीर में अधिक प्रोटीन पहुंचता है। इसके अतिरिक्त शाकाहारी भोजन में खास तौर से सब्जियों में कामेक्स कार्बोहाइड्रेट्स होते हैं जो सारे दिन लगातार धीरे-धीरे ऊर्जा प्रदान कर स्फूर्तिवान महसूस कराते हैं। पश्चिम के प्रशिक्षक अब अपने खिलाड़ियों को किसी प्रतियोगिता के कुछ दिन पहले कार्बोहाइड्रेट संपन्न भोजन अधिक करने की सलाह देते हैं, जिससे थकावट दूर रहती हैं और दमकसी बढ़ती हैं। इसके विपरीत प्रोटीन की अधिकता वाला भोजन थकावट और कमजोरी पैदा करता है।

शाकाहारी भोजन में विटामिन 'सी' 'ई' और बीटा कैरोटीन (विटामिन 'ए' का एक प्रकार) मांसाहारी भोजन की अपेक्षा बहुत ज्यादा होता हैं। ये तीनों विटामिन बुढ़ापा दूर रखने और उम्र के साथ शरीर के क्षय की प्रक्रिया को दूर रखने में सहायक होने के अतिरिक्त कैंसर और हृदय रोग से शरीर की रक्षा करते हैं।

आजकाल पूरे विश्व में इन तीन विटामिनों के गुणों की अपूर्व प्रशस्ति हो रही हैं। ये मांसाहारी भोजन में बहुत न्यून मात्रा में होते हैं। विटामिन 'सी' सभी फलो और सब्जियों में होता है और बीटा कैरोटीन पीली (गाजर, टमाटर, आम, पपीता आदि) और हरी (पालक, मैथी, चौलाई आदि) सब्जियों में भरपूर होता है। विटामिन 'ई' साबुत अनाजोंऔर तेलों में पर्याप्त मात्रा में होता है।

शाकाहारी भोजन में वसा (तेल) की मात्रा भी मांसाहारी भोजन की अपेक्षा बहुत कम होती है। अधिक वसा का सेवन कैंसर, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप और मधुमेह उत्पन्न करता हैं। मांसाहारी भोजन में जो वसा होती है, वह 'सेचुरेटेड' होती है। इसके विपरीत शाकाहारी खाद्य पदार्थों की पॉली-अनसेचुरेटेड तथा मोनो अनसेचुरेटेड वसा कम नुकसानदेह है। (सेचुरेटेड वसा वह हैं जो जम जात हैं, जैसे घी, डालडा, नारियल का तेल आदि) शाकाहारियों को नारियल के तेल से परहेज करना चाहिए। किन्तु यदि आप पूरी, परांठा, कचौड़ी, हलुआ खाने के शौकीन हैं तो आपको शाकाहारी होने के बावजूद कोई लाभ नहीं मिलेगा।

'विभावरी' , जी-९, सूर्यपुरम, नन्दनपुरा
झांसी-२८४००३ (उ.प्र.)

सामूहिक विवाह समाज सुधार की महत्वपूर्ण प्रक्रिया : शर्मा

लायन्स क्लब इन्टरनेशनल जिला ३२२बी, १ की ओर से १०० जोड़ों का सामूहिक विवाह लायंस हेस्टिंग्स ग्रामीण सेवा केंद्र, नंदकुटी, जिला हुगली में सम्पन्न हुआ। सामूहिक विवाह के चेयरमैन रामचंद्र बड़ोपालिया एवं लायन्स हेस्टिंग्स ग्रामीण सेवा केंद्र के चेयरमैन ओम प्रकाश पोद्दार, पूर्व पार्षद ने बताया कि ३७ आदिवासी बनवासी एवं १० मुस्लिम जोड़ो सहित १०० जोड़ो के सामूहिक विवाह में सुन्दरवन, बारासात, नदिया एवं राज्य के विभिन्न जिलों के जोड़े शामिल थे। पोद्दार ने बताया कि गरीबी रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले युवक-युवतियों, विकलांग युवक युवतियों एवं ग्रामीण परिवार के युवक-युवतियों के इस सामूहिक विवाह की महत्वपूर्ण उपलब्धि सर्वधर्म सद्भाव है। प्रत्येक जोड़े का विवाह उनकी धार्मिक परम्परा के अनुसार सम्पन्न कराया गया। प्रमुख वक्ता वेलारूस के कोंसुल जनरल सीताराम शर्मा ने अपने आशीर्वचन में कहा कि सामूहिक विवाह समाज सुधार की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसमें आडम्बर व दिखावा रहित विवाह सम्पन्न कराए जाते हैं। आशीर्वाद समारोह में विधायक स्मिता बक्शी, विधायक बेचाराम मन्ना, तृणमूल नेता संजय बक्सी, फादर सवेस्टीन जेम्स (सेंट जोवियर्स) ने कहा कि लायन बन्धुओं द्वारा सामूहिक विवाह का आयोजन मानवता के लिए गौरव तथा समाज सुधार के गण आंदोलन की शुरूआत है। समाजसेवी लक्ष्मीकांत तिवारी, घनश्याम शोभासरिया, विजय कुमार गुजरवासिया, रामविलास रावलवासिया, राम अवतार पोद्दार, द्वारका प्रसाद टांटिया, रामेश्वर भट्टड़,माणकचंद पारीख, राजेश सिंहा, सुरेश पाण्डे, श्रीधर पाण्डे, विनोद बंका, विनोद शर्मा एवं गणमान्य अतिथियों का स्वागत लायन नरेश दारुका (डी. जी), लायन पवन कुमार पोद्दार,

लायन पुष्पा अग्रवाल, लायन वासुदेव खेतान, रिंकू अग्रवाल, चंदा मेड़तिया, श्याम सुन्दर खंडेलवाल, पुष्पा खण्डेलवाल एवं लायन बंधुओं ने किया।

नारी के सर्वांगीण विकास में मातृत्व का योगदान

मातृत्व एक दैविय वरदान एवं अनुदान है। मातृत्व का तात्पर्य है गहन एवं सघन संवेदनशीलता। संवेदनशीलता मातृत्व का पर्याय है। माँ शब्द में संवेदना पिघल पिघल कर बहने लगती है और इसे वात्सल्य कहा जाता है। माँ को अपनी संतान के प्रति जो भाव होता है वह ऐसा रस है, जिसको पाने के लिये स्वयं भगवान शिशु का रुप धारण के लिये मचल जाते है और माता चाहे कौशल्या के रूप में हो या यशोदा के रूप में या किसी अन्य रूप में, राम और कृष्ण रूपी अवतारी शिशु को भी वात्सल्य रस से सरावोर कर देते है। मातृत्व नारी का सबसे बड़ा अलंकार है।

नारी के विकास के लिये नारी में स्वास्थ्य, शिक्षा एवं स्वावलंबन का होना अपरिहार्य है। इसके विना नारी के विकास की योजना केवल कपोल कल्पना बनकर घरी रह जायेगी।

नारी का स्वास्थ्य बहुत ही संवेदनशील होता है। नारी के विकास में स्वास्थ्य सबसे बड़ा एवं गहन मुद्दा है। यदि नारी के स्वास्थ्य में सकारात्मक बदलाव आ जाये तो विकास का पथ प्रशस्त हो जायेगा।

शिक्षा एक ऐसा तत्व है जिससे हमें एवं समाज को एक वैचारिक आधार प्राप्त होता है। इस प्रकार हमें यह निश्चित करना होगा कि हम समाज में नारी को देवी के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहते है या भोग्या के रूप में। नारी की गौरव-गरिमा, सम्मान को प्रतिष्ठित करने के लिये ऐसा ही वैचारिक आधार देना पड़ेगा। उसे आत्मनिर्भर होने वाली शिक्षा भी देनी चाहिये, ताकि वह अबला एवं निर्धन नारी की मानसिकता से उबरे एवं साहस व संकल्प के साथ स्वावलंवी बन सकेगी।

स्वावलंबन एक ऐसा तत्व है, जिसमें श्रम, विचार एवं व्यवस्था वृद्धि, तीनों का समावेश होता है। श्रम शरीर के द्वारा किया जाता है, मन के तल से विचार संवधित है और व्यवस्था वृद्धि के द्वारा किसी योजना को क्रियान्वित किया जाता है।

नारी को अपनी गृहस्थी या जीवन चलाने के लिये अपने पति या परिवारवालों के प्रति आश्रित रहना पड़ता है।

स्वावलंवन से नारी अनेक प्रकार कें बंधनों से निकल सकती है। विकास की इस दौड़ में नारी को अपनी सूझ-बूझ एवं विवेक से आनेवाली चुनौतियों का सामना करना चाहिये, क्योंकि उनके सामने चुनौतियाँ कम नहीं है। ●

– **सत्यनारायण तुलस्यान**
(आ. सदस्य, अ.भा.मारवाड़ी सम्मेलन, विहार)

समाज विकास में वर-वधू परिचय

आपकी पत्रिका 'समाज विकास' ने एक नये 'वर-वधू परिचय' स्तम्भ के अन्तर्गत वैवाहिक सम्बंधों हेतु संक्षिप्त वर-वधू परिचय का निःशुल्क प्रकाशन आरम्भ किया है।

इच्छुक अभिभावकों से अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्री का नाम, शिक्षा, उम्र, जाति, गौत्र, कद, रंग आदि विवरण सम्पादक, समाज विकास, १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७०००००७, फोन व फैक्स ०३३-२२६८ ०३१९ के नाम आमंत्रित है।

नाम	–	**अभिनव कुमार शर्मा** (२४ वर्ष)
पिता का नाम	–	श्री अरविंद कुमार शर्मा (शास्त्री)
शिक्षा	–	बी. कॉम, सॉस्टवेयर इंजीनियर
पेशा	–	आइ टी एम, कोलकाता में कार्यरत
जाति/गौत्र	–	शांडिल्य (हरितवाल)
कद	–	५' १०", रंग-साफ
पैतृक निवास	–	रामगढ़, शेखावाटी (राजस्थान)
निवास	–	सत्यम ऑपार्टमेंट ९७/९९/४, श्री अरविंद रोड बाँधाघाट, सलकिया, हावड़ा - ६

नाम	–	**घनश्याम दास मूँधड़ा** (३४ वर्ष)
पिता का नाम	–	श्री गिरधार दास मूँधड़ा
शिक्षा	–	माध्यमिक
पेशा	–	फिनेंस
जाति	–	माहेश्वरी
गौत्र	–	
कद	–	५' २", रंग - सांवला
पैतृक निवास	–	बीकानेर
निवास	–	१४, शिवठाकुर गली कोलकाता - ७

viom
NETWORKS

A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

Independent entity with over 38,000 towers and over 89000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

First Indian Telecom Infrastructure Company to receive ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification

Viom Networks Limited

Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2010-2012
Date of Publication - 29 February, 2012
RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : aimf1935@gmail.com

SRI KAILASHPATI TODI (L.M.)
JOINT GENERAL SECRETARY, A.I.M.F
16, KISHANLAL BURMAN ROAD
BANDHAGHAT, SALKIA
HOWRAH- 711106
WEST BENGAL